आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 10 | उदयपुर शुक्रवार 01 जून 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

आजादी पूर्व के मेरे गांव में जनसंचार

- डॉ. कनक उदावत -

जनसंचार मनुष्य के सामाजिक जीवन की मूलभूत प्रवृत्ति है और भाषा उसका सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम। मनुष्य के अस्तिव के साथ-साथ ही जनसंचार का भी अस्तित्व रहा है। मनुष्य के पास जनसंचार का जो प्रारंभिक रूप था वह मानवीय और जीवंत था जिसमें मनुष्य मनुष्य के आमने-सामने उपस्थित होकर अपनों से अपनी भाषा में अपनों के लिए अपनी बात कहता था। यह जनसंचार का लोकमय जीवन्त रूप था।

आज हम यंत्र और तकनीक पर आधारित संचार प्रणाली के साथ जी रहे हैं और संचार उपकरणों की हमारी जीवनचर्या में इतनी अधिक स्थापना हो गई है कि मानवीय तत्व विस्थापित हो गया है परन्तु आज से साठ-सत्तर वर्ष पूर्व तक जनसंचार का लोकमय जीवन्त रूप ही हमारे जीवन का अंग था। बीसवीं शताब्दी के द्वितीय चरण में, हमारे गांव में भी लोकमय जीवन्त जनसंचार के संवाहक लोगों के कर्मशील जीवन को हमने देखा था।

हमारा गांव कानोड़ ; पांच-छह हजार की जनसंख्या का छोटा सा गांव न रेल, न मोटर, न साइकिल और न सड़क। आना-जाना पैदल या बैलगाड़ी या घोड़ा। शिक्षा के नाम पर एक सरकारी प्राइमरी स्कूल और स्कूल में डाक की छोटी-मोटी सेवा ; बस। इस स्कूल में एक 'माड़साब' थे, श्री उमादत्तजी। उत्तरप्रदेश से आये थे और चालीस वर्ष तक कानोड़ में रहे। जनसंचार के सफल संवाहक। उनके द्वारा जनसंचार का कार्य प्रायोजित नहीं था ; अन्तप्रेरणा से स्वत: स्फूर्त और सहज था।

उनकी जीवनशैली इस प्रकार की थी कि उनकी दिनचर्या में ही जनसम्पर्क द्वारा जनसंचार और जनजागरण का कार्य सम्पन्न हो जाता था। धोती और ढीला-ढाला लम्बा कुर्ता और सर्दी हो तो वैसा ही लम्बा ढीला-ढाला कोट पहने माड़साब गांव के इस या उस मोड़ पर दिखाई दे जाते थे। उनके कुर्ते या कोट में जेबें ज्यादा होती थीं। कभी-कभी कंधे पर एक झोला भी शोभा देता था। झोला-जेबें इसलिए कि उनमें अखबार और डाक की सामग्री रहती थी। हेडमास्टर भी वे ही थे और पोस्टमास्टर भी वे ही।

स्कूल टाइम के पहले और बाद में अर्थात् सुबह और शाम नियमित रूप से भ्रमण के लिए निकलते थे। हाथ में लाठी अवश्य होती थी। कभी इधर कभी उधर, कभी इस गली-मोहल्ले में ,कभी उस गली-मोहल्ले में उनकी पदचाप सुनाई पड़ जाती थी। गांव के हर परिवार से, हर जाति के लोगों से, हर धंधे वाले से उनका जीवन्त सम्पर्क था।

भ्रमण की इस वेला में माड़साब की जेबों और झोले में डाक की सामग्री के साथ एक-आध अखबार रहते थे। जब भी और जहां भी जिसने भी डाक संबंधी सामग्री मांगी, वहीं दे दी। वे चलते-फिरते डाकघर थे। चलते-चलते कहीं दो-चार लोग मिल गये और कुछ पूछ लिया तो किसी चौक में, किसी पेड़ के नीचे, किसी दुकान की चबूतरी पर बैठ जाते और अखबार में आई देश-विदेश की खबरों की जानकारी एकत्र जनसमूह को दे देते। वहीं पर विचारों का आदान-प्रदान और टीका-टिप्पणी चलती रहती। माड़साब प्राय: हमारी दुकान पर बैठा करते थे, क्योंकि वहां स्वाधीनता संग्राम की गतिविधियों का संचालन भी होता था।

जनसंचार के कार्य में स्वतंत्रता सेनानियों ने भी बहुत योग दिया। कानोड़ जैसे छोटे से गांव से तेरह स्वतंत्रता सेनानी निकले। जनसंख्या के अनुपात से देखें और संचार के सीमित साधनों तथा शिक्षा की स्थिति से देखें तो यह बहुत बड़ी बात थी। मेरे बासाब सुखलालजी और पिताजी जवाहरलालजी (दोनों ऊदावत बंधु) स्वतंत्रता सेनानी थे। हमारी दुकान पर व्यवसाय के मध्य बचे हुए समय में स्वाधीनता आन्दोलन के कार्यक्रम पर भी चर्चा होती रहती थी।

इन स्वतंत्रता सेनानियों ने जनसंचार की विविध विधाओं का प्रयोग किया, जैसे - प्रभातफेरी, जुलूस, सभाओं का आयोजन, नारेबाजी, भाषण, विचार गोष्ठियां, प्रार्थनासभा, देशभक्तिपूर्ण गीतों का गायन आदि-आदि। सभा के आयोजन की सूचना भोंपू द्वारा घूम-घूम कर पूरे गांव में देते। हमारी बालमंडली भी इस कार्य में उत्साहित रहती थी। इन स्वतंत्रता सेनानियों का जनसंपर्क और जनसंचार अपने गांव तक ही सीमित नहीं था। वे कानोड़ के चारों ओर बसे हुए खेड़ों, गांवों में जाकर आंचलिक भाषा-मुहावरों में स्वाधीनता की अलख जगाया करते थे। जाना-आना या तो पैदल या बैलगाड़ियों से होता।

जनसंचार का महत्वपूर्ण माध्यम है पुस्तकालय। वाचनालय। स्वतंत्रता सेनानियों ने गांव में एक पुस्तकालय-वाचनालय की भी व्यवस्था की। एक रूपया, दो रूपया चंदा कर यह पुस्तकालय-वाचनालय चलाया जाता था। स्वतंत्रता सेनानियों में से जवाहरलालजी पुस्तकालय-वाचनालय के प्रभारी थे। एक-आध अखबार और स्वाधीनता आंदोलन संबंधी प्रचार सामग्री उपलब्ध रहती थी। 'वीर अर्जुन', 'कर्मयोगी' अखबार मिलते थे। यहां बैठकर पढ़ते भी थे और विचार-विमर्श भी करते थे। पुस्तकों की व्यवस्था सुखलालजी ऊदावत करते थे। वे जब भी बाहर जाते तो एक-आध पुस्तक ले आते। उनके निजी संग्रह में विविध विषयों की पुस्तकें थीं, जो अब मेरे पास सुरक्षित हैं।

जनसंचार की विधाओं में सर्वाधिक प्रभावशली विधा है नाटक और भाषण। पंडित उदय जैन द्वारा स्थापित एवं संचालित जवाहर विद्यापीठ में इन दोनों विधाओं का विकास हुआ। शनिवार को आधे दिन पढ़ाई के बाद छात्रसभा का नियमित आयोजन होता था जिसमें किसी समसामयिक विषय पर भाषण और वाद-विवाद होता था।

विद्यापीठ का जो वार्षिक समारोह होता था उसमें नाटक अवश्य खेला जाता था। दानवीर कर्ण, श्रवण कुमार, अभिमन्यु, महाराणा प्रताप आदि नाटक होते थे। जैन साहब स्वयं अच्छी कविताएं और नाटक लिखते। उनका लिखा प्रताप नाटक बहुत चर्चित रहा। इन नाटकों का उद्देश्य था जनगण के मन में देशभक्ति, त्याग, शौर्य, सेवा, लोकहित, सदाचार जैसे जीवनमूल्यों को पुष्ट करना।

गांव में जनसंचार की डाकसेवा की बात अधूरी रह जायेगी यदि डाक वाहक 'गट्या माराज' का जिक्र न करूं। जब कानोड़ में रेल आ गई तो डाक का थैला रेलवे स्टेशन से लाना होता था जो गांव से तीन किलोमीटर दूर था। पैदल जाना-आना। 'गट्या माराज' वामन रूप में थे। तीन किलोमीटर से डाकथैला कंधे पर डालकर लाते थे। उनकी पीठ पर पड़ा थैला उनकी पिंडलियों तक पहुंचता था। यदि कोई उन्हें सामने से देखता तो 'गट्या माराज' चलते हुए दिखाई देते थे और यदि कोई पीछे से देखता तो डाक का थैला चलता हुआ दिखाई देता। इतनी श्रमसाध्य डाकसेवा के बाद भी 'गट्या माराज' के चेहरे पर आह्लाद की रेखाएं फीकी नहीं पड़ीं।

आज हमारे पास दिन, वार, तिथि, मास आदि की सूचना के लिए केलेंडर हैं, अखबार हैं लेकिन उस समय नहीं थे। उस समय पंचांग (टीपणा) होता था जो किसी ब्राह्मण, पंडित, ज्योतिषी के पास होता था किंतु केलेंडर, अखबार की तरह सर्वजन सुलभ नहीं होता था। ऐसी स्थिति में हमारे गांव में श्री चतरभजजी 'माराज' चलते-फिरते कलेंडर थे। प्रात:काल गांव की गलियों में घर-घर घूमते हुए आवाज लगाते- 'आज .... वार है .... मास की.... तिथि है, ... व्रत है.... त्यौहार है।'

वे यह सेवा बिना वेतन के करते थे और गृहलक्ष्मियां दो मुट्ठी धान-चून उनकी झोली में डालकर अपनी कृतज्ञता प्रकट करती थीं। सेवा से सेवा और जीवन का चक्र चलता रहता।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक जागरण की पृष्ठभूमि में बीसवीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हमारे लोकमय, मानवीय और जीवंत जनसंचार की इस रसवंती धारा ने ऐसा वातावरण निर्मित किया कि नई पीढ़ी को लेखक, वक्ता, कवि, पत्रकार आदि बनने की प्रेरणा मिली।

श्री सवाईसिंहजी नागौरी, डॉ. मोहनलालजी मेहता, श्री विपिनजी जारोली, डॉ. नरेन्द्रजी भानावत, श्री सुरेंद्रजी वया, डॉ. महेन्द्रजी भानावत आदि कई व्यक्तियों ने जनसंचार की विविध विधाओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

आज हम यंत्र और तकनीक पर आधारित जनसंचार प्रणाली के साथ जी रहे हैं। इस नवीनतम जनसंचार प्रणाली ने जनसंचार को इतना व्यापक आयाम दिया है कि आधुनिक मनुष्य इसे संचारक्रांति कहकर गौरवान्वित अनुभव करता है। इस संचारक्रांति से अभिभूत मन के लिए यह विश्वास करना कठिन है कि अस्सी-पचहत्तर वर्ष पूर्व बिना यांत्रिक-तकनीकी उपकरणों के भी पूरे भारत में गांव-गांव, गली-गली जनसंचार का राष्ट्रव्यापी अभियान सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ था। हम लोग जो अपनी-अपनी जीवनयात्रा के तीन चरण पूरे कर चुके हैं और चौथे चरण में चल रहे हैं। उनके मानसलोक में जनसंचार की दोनों अवस्थाओं के बिम्ब, प्रभाव और अनुभव विद्यमान हैं। इस अवस्था में हम जी रहे हैं और उसकी हमारे पास मधुर स्मृतियां हैं। इससे हम चमत्कृत हैं और उससे अभिभूत।

वह जनसंचार की उभय पक्षी प्रक्रिया थी। उसमें परस्परता थी। लोकमयता थी और जीवंतता थी। उसमें अपनी भाषा, बोली थी। भावभंगिमा तथा हावभाव की जीवंतता उसे रसमय बनाती थी। उसमें सरलता थी। प्रत्यक्ष संवाद के कारण भाषा की प्रांजलता, कथ्य की गरिमा, वक्ता का दायित्व-बोध बना रहता था। उससे ज्ञान भी मिलता था और भावलोक भी पुष्ट होता था। वह ऐसी रसवंती धारा थी जिससे आलोक भी मिलता था और आह्लाद भी।

यह सब इस संचार प्रणाली में कहीं खो गया है। यह स्वाभाविक भी है। उसमें मनुष्य प्रतिष्ठित था और इसमें यंत्र प्रतिष्ठित है। इन दोनों अवस्थाओं के प्रभाव बार-बार मानस-पटल पर उभरते हैं। टीवी पर चौबीस घंटे ब्रेक न्यूज, वाट्सअप, सोशल मीडिया आदि के द्वारा मनोलोक में कोलाहल भी छाया रहता है और साथ ही जनसंचार की उस रसवंती धारा का संचार भी होता रहता है तो ऐसा लगता है-

(इस) तुमुल कोलाहल कलह में
(वह) हृदय की बात रे मन। (-प्रसाद)

स्मृतियों के शिखर (53) : डॉ. महेन्द्र भानावत

संघर्ष साहस और स्वाभिमान सने ओंकारश्री

ओंकारश्री हिन्दी-राजस्थानी अथवा राजस्थानी-हिन्दी के अलगोजा ही थे। जैसे अलगोजा में बांस की दो नलिकाएं होती हैं जो बांसुरी की तरह फूंक से बजाई जाती हैं वैसे ही ओंकारश्री हिन्दी-राजस्थानी दोनों भाषाएं लिये पूरक बने रहे। उनके पक्ष में राजस्थान की दोनों अकादमियां भी कारगर रहीं। बीकानेर की राजस्थानी भाषा साहित्य तथा संस्कृति अकादमी तथा उदयुपर की राजस्थान साहित्य अकादमी में उन्होंने अपनी महनीय सेवाएं दीं।

जीवन के अन्त तक वे अक्खड़-बक्खड़ सुधारवादी स्वभाव के बने रहे। जात-पांत के बन्धनों से वे मुक्त रहे। सबसे पहले तो जयप्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रांति आह्वान पर उन्होंने जाति-दम्भ तोड़ने के लिए अपने नाम से लगा पारीक शब्द ही हटा दिया और ओंकारश्री हो गये। हम मजाक में कभी-कभी उन्हें श्रीश्री ओंकारश्री कहते तो वे खुश ही होते।

बीकानेर में 26 मार्च 1933 को जन्मे ओंकारश्री से मेरा परिचय 1954 में हो गया था। बीकानेर में वे मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत के सहपाठी रहे। मेरी कॉज की बी.ए. तक की पढ़ाई वहीं हुई। वे भाई साहब के घनिष्ट मित्रों में से थे। जब 7 फरवरी 1957 को हमारी जन्मभूमि कानोड़ में भाई साहब का विवाह हुआ तब ओंकारश्री ने उसमें भाग लिया था इस कारण वे हमारे परिवार के भी अन्तरंग हो गये थे। यह रिश्ता अन्त तक बना रहा।

वे आजीवन संघर्ष साहस और स्वाभिमान की त्रिवेणी में तेरह पत्ती बने रहे। उनका व्यक्तित्व सदैव ही स्वाभिमानी सोटा चलाने वाला, रूढ़ लेखन को पीठ दिखाने वाला, अपनी मरोड़ की अलम से मोठ पकाने वाला, खरी-खोटी मसखरी मारने वाला, यार-दोस्तों के साथ खासी दांतकूटी करने वाला रहा। उनके सिर की बनावट देख हम उसे नारियल की उपमा देते। वे अपने मिजाज में, लेखन में, सोच-समझ में सदैव अन्यों से अलग ही बने रहे।

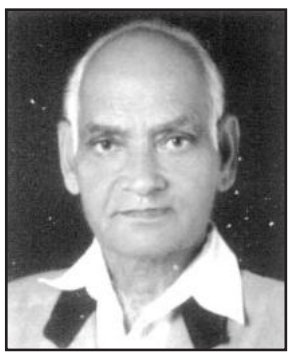

उदयपुर में वे पहली बार राजस्थान साहित्य अकादमी के राजस्थानी विभाग में आये थे तब अकादमियों का भाषावार विभाजन नहीं हुआ था। मंगल सक्सेना निदेशक पद पर कार्यरत थे। वे बीकानेर के ही थे सो इन्हें यहां ले आये। जब बीकानेर में राजस्थानी अकादमी की स्थापना हुई तो ओंकारश्री सचिव बनकर बीकानेर चले गए। उदयपुर में स्थायी निवास के चलते दोनों अकादमियों द्वारा आयोजित अनेक समारोहों, संगोष्ठियों में उनसे मेरी भेंट होती रही।

मैंने कानोड़ में भी ऐसे समारोह आयोजित किये-करवाये जहां अनेक दिग्गज लेखकों, कवियों ने गांव का आत्मीय अपनापन पाकर घनानंद-सुखानंद लिया। कई कविसम्मेलनों और आकाशवाणी कविगोष्ठियों में भी नंद चतुर्वेदी, प्रकाश आतुर, देवकर्णसिंह, मंगल सक्सेना, शंकर क्रन्दन, भगवतीलाल व्यास, कमर मेवाड़ी, पुरुषोत्तम छंगाणी आदि के साथ की हमारी मिलनियां भले ही अतीतजीवी हो गई हों किन्तु उनसे जुड़ा जीवन रस मुझे निरन्तर सरस जीवन की चासनियों से आज भी सरोबार किये रहता है।

ओंकारश्री अपने लेखन में सदैव प्रयोगधर्मी बने रहे। उदाहरणस्वरूप उनकी कविता पुस्तक 'एक पंख आकाश' का जिक्र करना चाहूंगा जिसे 1969 में कमर मेवाड़ी ने कांकरोली से अपने सम्बोधन प्रकाशन से छापी थी। कुल अड़तालीस कविताओं की यह पुस्तक भेंट करते वे बड़े खुश मिजाज थे कि नई-कविताओं में नव-बोध का सूत्रपात करने वाले वे पहले कवि हैं किन्तु वे इस अहं से मित्रों में दिल्लगी का कारण ही बने। इस पुस्तक में ओंकारश्री ने एक, दो से लेकर तीन पंक्ति से लेकर इक्की-दुक्की पांच-छह पंक्तियों की लघु शब्दाकारी कविताएं संजोई हैं। यथा-

(क) मैं अवयस्क वृद्ध (ख) अर्थ / रास्ता जो मुझ तक लाए (ग) भीड़ घर हूं / कीड़ी नगर का (घ) भूखे पेड़ रीते तट/ त्रयामी हम (च) ओ मेरे बिता स्वर / आज भी भरेगा / कोई परम-ईश्वर मुझमें (छ) दीवारें जगमग / दीपक शीश महल का / बुझने को लगभग (ज) संदर्भ छानना / खून से सांस धोना / एकांगी होना / व्यर्थ नहीं (झ) मैं / देह मुक्त??? / पंख है वि-देह / आ / पुकारती धरती।

इसके बाद एक दिन किसी ने मुझे एक पंख आकाश पुस्तक के नीचे का हिस्सा करीब 3 इन्च का जिसमें सारी कविताएं छपी थीं और ऊपर का खाली हिस्सा अलग कर, मुझे भेज दिया। साथ में एक रूक्के पर कविजजी के लिए लिखा था-

'कविजी, आपकी नई कविताओं का यह नव प्रसाद प्रासाद मानकर आपको ससलाम भेंट। चाहें तो इसे अपनी जेबड़ी में, चाहें तो चूल्हे की ओट में या फिर बरसाती आहड़ के हाड़ में तिरा दें।' आध घंटे की उस मुलाकात में ओंकारश्री निरन्तर अपनी मुस्कान ही मारते रहे। मैं मन ही मन उदास चेहरा लिए सोचता रहा कि जैसा प्रयोग ओंकारश्री ने किया वैसा ही प्रयोग छेड़खानी करने वालों का लगता है लेकिन ओंकारश्री बड़ी बुलन्दगी से आंखें तरेरते कहते रहे- 'गीताजंलि के रचनाकार कवीन्द्र-रवीन्द्र के लिए भी ऐसी ही मसखरियां चलती रहीं पर उन्होंने परवाह नहीं की। मेरा नव-गीत-बोध तेजतर्रार होकर कइयों की छाती फोड़ता लगेगा।'

ओंकारश्री ने कई बार जिक्र किया कि उनके पास प्रेस क्लिपिंग्स का जबर्दस्त संग्रह है और उसे वे अपने जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि मानते हैं। ऐसी उन्होंने विषयवार वर्गीकृत कई फाइलें भी बताईं। हजारों आलेख, प्रेस संवाद, जीवनियां, विशिष्ट घटनापरक पत्रक, संस्कृति संगम जैसी एक सौ के करीब संग्रहणियों का जिक्र किया।

महत्वपूर्ण पक्ष यह रहा कि जीवन के उत्तरार्द्ध में उन्हांने जगह-जगह इस संग्रह को अवदानित कर दिया। ऐसे ही विविध ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाएं उनके पास संभली हुई थीं। राजस्थान के विविध शैक्षिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक प्रतिष्ठानों को करीब दस हजार ग्रंथ, दो हजार पत्र-पत्रिकाएं तथा तीस हजार प्रेस संदर्भिकाएं वे भेंट कर चुके थे। उन्होंने बताया कि इसकी प्रेरणा उन्हें प्रज्ञा चक्षु सत्यदेव विद्यालंकार से, बीकानेर में उनके एक व्याख्यान के दौरान मिली।

ओंकारश्री का उतर जीवन असाध्य शारीरिक रोगों से घिरा रहा किन्तु उन्होंने उसकी जरा भी परवाह नहीं की। मैं जब भी गया, उसी होश तथा दादागिरी दिल्लगी के साथ बतियाते रहे। उन्होंने अधिक नहीं लिखा किन्तु अपनी दमखमी पर वे साहित्यिकों के बीच अपने को श्रेष्ठतर ही मानते रहे। उनसे मेरी आखिरी मुलाकात डॉ. विश्वंभर व्यास के साथ रही। बड़ी देर तक हम तीनों मन खोलकर अगजग की चर्चाओं में खोते रहे। हमारे बार-बार उठ कर उनसे विदा लेने का उपक्रम करने पर भी वे हमें रोकते रहे। उनमें जीने की जीवन्त जिजीविषा थी। विश्वंभर को कहा भी कि 'अबकी बार जब भी आओगे, मैं एक तगड़ा इन्टरव्यू दूंगा जिसमें कई बातों का खलासा करूंगा' और मुझे कहा, 'विश्वंभर को लाने की जिम्मेदारी महेन्द्र तुम्हारी है। ऐसी ही एक बैठक और बनेगी।'

कुछ दिनों बाद ओंकारश्री ने फोन किया, 'महेन्द्र, एक धारदार कविता लिखी है, सुनो।' मैं सुनता रहा। कविता थी-

ऊपर भी हम, नीचे भी हम
आगे भी हम, पीछे भी हम
सूजे-सूजे पांव हमारे
कहां थके हैं हम
भीड़ भरे चौराहे ऊपर
किसे पुकारें हम।

मुझे क्या मालूम कि मैं यह कविता उनसे आखिरी बार सुन रहा हूं। पांव तो उनके सूजे हुए थे ही। चेहरा भी उतर गया था। शरीर भी कमजारी से दबा जा रहा था पर वे पूरी जिन्दादिली लिए थे। उनकी मृत्यु की खबर श्मशान से आबिद अदीब ने दी थी। मैं संभल नहीं पाया। हड़बड़ी की स्थिति में श्मशान पहुंचा और नंदबाबू को सूचना दी। नंदबाबू भर्राई आवाज में शून्य होते बोले, 'मैं इधर विश्वंभर की दाहक्रिया में श्मशान में हूं।' 11 नवम्बर 2013 का क्रूर काल दोनों को छिन ले गया। इन्टरव्यू देने वाले और लेने वाले दोनों साथ-साथ चले गये। दोनों ही जीवन की त्रासदायक स्थितियों से गुजरे लेकिन अपने स्वाभिमान और गरिमा के साथ जिये। ऐसे दुर्लभ दोस्त अपने फन के लिए सदैव याद किये जायेंगे।

राजन को 'सृजन साहित्य सम्मान'

इसी तरह 5 मई को ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया के एस. के. एम. पब्लिक स्कूल में प्राचार्य कृष्ण मुरारी वरिष्ठ साहित्यकार गोविन्द शर्मा ने राजकुमार को स्वामी केशवानंदजी का साहित्य भेंट कर स्वागत किया और कहा कि राजन ने न केवल बच्चों के लिए शानदार किताबें लिखी वरन् वे बालसाहित्य के उन्नयन के साथ ही बालसाहित्य के रचनाकारों को प्रोत्साहन-सम्मान देने का काम भी वर्षों से निरूस्वार्थ भाव से कर रहे हैं। इस अवसर पर राजकुमार राजन ने पुस्तकालय को 4472 मूल्य की 61 पुस्तकें उपहार स्वरुप भेंट की।

जो बच्चा आने वाले समाज को दिशा देने वाला है अगर आज हम उसकी दिशा तय नहीं कर रहे हैं तो हमारा किया हुआ सब बेकार है। जो बच्चों को प्रेरणा दे, वही साहित्य अच्छा है। यदि बच्चों को पठन-पाठन से नहीं जोड़ा गया तो हिंदी लंबे समय तक नहीं बचने वाली है। कुछ ऐसे ही उद्गार श्रीगंगानगर में सृजन सेवा संस्थान के आयोजन में राजकुमार जैन 'राजन' ने व्यक्त किये जहां उन्हें 'सृजन साहित्य सम्मान' से विभूषित किया गया।

डॉ. जावलियाजी से यदाकदा की भेंट

डॉ. ब्रजमोहन जावलिया हमारी संगतपीठ के सबसे पुराने साथीी हैं। ऐसे जो भी साथी हैं उनसे मिलने की भावड़ बनी रहती है। यों याद करें तो वह मण्डली काफी खाली हो गई है। स्वर्णकाल तो तब था जब नंद चतुर्वेदी, डॉ. प्रकाश 'आतुर', पूनम दईया, मंगल सक्सेना, ओंकारश्री, डॉ. विश्वंभर व्यास, राजेन्द्र सक्सेना, नेमनारायण जोशी, घनश्याम 'शलभ', डॉ. सुधा गुप्ता, आलमशाह खान थे। उनसे साहित्यिक गवाड़ी भरी रहती थी। सब अपने-अपने नक्श में टिपिकल थे।

अब जो हैं वे पूर्ण अलंकारी नहीं हैं। भगवतीलाल (व्यास) बाबू कम सुनने लगे हैं। डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी कम देखने लगे हैं। देवकर्णसिंह कम चलने लगे हैं। मैं भी कम निकलने लगा हूं। हम सबमें डॉ. देव कोठारी जब भी मिलते हैं, मुझे 'पवन वेग से उड़ने वाले घोड़े' की तरह ही चुस्त ऊर्जावान बने लगते हैं।

सो उस दिन प्रसंग निकला तो दोनों डॉ. जावलियाजी से मिलने चले गये। वह मई की ढलती दुपहरी थी। भटियाणी चौहट्टा की गली पकड़ते लगा कि जावलियाजी सो रहे होंगे मगर वे कोलकाता से प्रकाशित वैचारिकी पत्रिका पढ़ने में मग्न थे। बोले, अभी-अभी यह अंक आया है। हम तीनों उस दौर में चले गये जब भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर से वैचारिकी का प्रकाशन होता था। वहीं से शार्दुल राजस्थानी रिसर्च इस्न्टीट्यूट से राजस्थान भारती निकलती थी। ऐसी ही पिलानी से राजस्थान भारती, बिसाऊ से वरदा तथा उदयपुर से शोध पत्रिका का प्रकाशन होता था। अब जैसे उन सबको अकाल की नजर लग गई है।

जावलियाजी की मुश्किल यह हो गई है कि वे कम ही नहीं, बिल्कुल ही नहीं सुनते हैं। बोले, मशीन लगाने पर भी नहीं सुनाई देता सो वे अपने पास पाटी और बरतना रखते हैं। यह एक ऐसा माध्यम है जिससे मिलने का कोई सुख नहीं बनता सो हां-हूं करते-कराते भी आध-पौन घंटा हम उनके साथ रहे।

मेरी उनके साथ पचास से अधिक वर्ष की रसदार स्मृतियां हैं। उनको मैं चाह कर भी नहीं रपटा सका। उम्र पूछने पर जावलियाजी प्रसन्न वदन बोले, नब्बे का हूं। मैंने कहा- अब 'अणु' वर्ष में प्रवेश करेंगे और अंत में 'सौ भागा भौ' कहकर हमने भी विदा ली।

झीलों की हलचल

प्रो. देवकर्ण से मेरी मैत्री जलजवत : डॉ. भानावत

प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़ से मेरी मैत्री पिछले 50 वर्ष से है इसलिए हम दोनों एक-दूसरे के स्वर्ण मित्र हैं। यह मैत्री

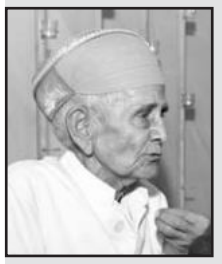

जलजवत है। वह जलज जिसे जल भी चाहे तो दाग नहीं लगा सकता। हमारी मैत्री भी कभी बे-मन नहीं रही। उन्हें भक्त-कवि पद्मश्री दुलाभाया काग लोकसाहित्य अवार्ड से नवाजा जाना यह सिद्ध करता है कि प्रो. राठौड़ द्वारा सृजित डिंगल काव्य लोक से अधिक निकट सहज और सरल रूप में आदरित है। ये विचार लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत ने व्यक्त किये। वे उदयपुर में 23 मई को आयोजित गुजरात के कागधाम (मजादर) के सम्मान समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रो. राठौड़ ने डिंगल को दुरुह होने से बचाया और हिन्दीमय कर अतीत की भाषा नहीं बनने दिया।

हिन्दीमय डिंगल और डिंगलमय हिन्दी बनाने में उनका उल्लेखनीय योगदान सदैव याद रहेगा। सम्मान स्वरूप प्रो. देवकर्णसिंह को प्रशस्तिपत्र, शॉल, स्मृति चिन्ह तथा 51 हजार की राशि भेंट की गई।

मुख्य अतिथि आवार्ड कमेटी के प्रतिभागी सागर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. बलवन्त जॉनी ने कहा कि प्रतिवर्ष यह समारोह मुरारी बापू के सान्निध्य में आयोजित किया जाता है। प्रो. राठौड़ के किन्हीं कारणवश उस समारोह में उपस्थित नहीं होने के कारण इसे बापू के आशीर्वाद से यहां आयोजित किया गया है। उन्होंने कहा कि इस सम्मान के अन्तर्गत प्रतिवर्ष भारतीय साहित्य परम्परा को आगे बढ़ाने वाली पांच विभूतियों को नवाजा जाता है। इनमें चार गुजरात से तथा एक राजस्थान से चयनित की जाती है।

विशिष्ट अतिथि सौराष्ट्र विश्वविद्यालय राजकोट के झवेरचंद मेघाणी लोकसाहित्य केन्द्र के निदेशक डॉ. अम्बादान रोहड़िया तथा चारण महासभा के अध्यक्ष प्रवीनदान रोहड़िया ने सम्मान परम्परा तथा अब तक दिये गये सम्मानों की जानकारी दी। राजस्थान विद्यापीठ विश्विविद्यालय के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने आज के तकनीकी प्रधान युग में संवेदनशीलता को बनाये रखने पर जोर दिया और कहा कि साहित्य ही वह शस्त्र है जिससे मानवता की मूल्यवान धरोहर संरक्षित की जा सकती है और क्षरण होते मनुष्य की मूल्यवत्ता स्थापित की जा सकती है। डॉ. राजशेखर व्यास ने प्रो. राठौड़ को समृद्ध रचनाकर्मी तथा डिंगल काव्यधारा का प्रतिनिधि हस्ताक्षर बताया।

इस अवसर पर अभिनंदनीय प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़ ने अत्यन्त भावुक मन लिए मुरारी बापू को नमन करते उनके आशिष को अपना सौभाग्य माना। फरमाइश पर उन्होंने अपनी 21 काव्य कृतियों में से पिउ पियै दारुह के महत्वपूर्ण दोहों का सरल वाचन करते हुए सुधी श्रोताओं को बताया कि उन्होंने अपने पिता को अहर्निश दारु पीते अपने घर को बर्बाद होते देखा और मां की अरह्य वेदना का दुख झेला है। उसी भोगे हुए यथार्थ से प्रेरित हो उन्होंने इस कृति की रचना की है। कृति में अपनी माताश्री की व्यथा को अन्तस करते उनके ये दोहे द्रष्टव्य हैं-

उडकूं आधी रात तंइ, वळै न वै बारूंह
दहु रा दहु भूका सुआं, पिउ पियै दारूह

अर्थात् : आए दिन आधी रात पर्यन्त टकटकी लगा उनकी बाट जोहती रहती हूं, किन्तु वे पियक्कड़ कहां लौटते हैं। मैं थकी मांदी भूखी पड़ी रहती हूं और वे भी पता नहीं कब आकर नशे में बिना खाये ही सो जाते हैं।

किण घर जा सुख सांस लूं, कुण जा पुकारूंह
पीहरिये बाबल पियै, (अठै) पिउ पियै दारूह

अर्थात् : कहां जा कर चैन की सांस लूं और किसे अपनी व्यथा-कथा सुनाऊं? पीहर में पिताश्री और यहां पतिदेव अनाप-शनाप पीते हैं।

म्हां जसड़ी धण मोकळी, म्हां जसड़ा मारूह
सै सामल आंसू पियां, पिउ पियै दारूह

अर्थात् : मेरे जैसी अनगिन औरतें और उन जैसे कई एक आदमी हैं। जब हम समदुखिनी एक दूसरे के आंसू बांट रही होती हैं तब उधर वे हमप्यालों के साथ जी रहे होते हैं।

प्रो. देवकर्णसिंह ने कहा कि मेरी अधिकांश काव्य-पुस्तकों का संपादन हिन्दी-अंग्रेजी भावार्थ सहित प्रो. जी. एस. राठौड़ ने किया है। पिउ पियै दारुह की भूमिका तो डॉ. महेन्द्र भानावत ने ही लिखी है।

समारोह में प्रो. जी. एस. राठौड़, शिक्षाविद् भंवर सेठ, गीतकार किशन दाधीच, पत्रकार उग्रसेन राव, प्रो. एकलिंगसिंह झाला, मोतीसिंह झाला, प्रो. रेणु राठौड़, डॉ. रीतू तंवर, डॉ. सरला शर्मा, प्रो. नीरु राठौड़ एवं डॉ. सुनीता सहित शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इस बीच प्रो. देवकर्णसिंह की सहधर्मिणी का भावभीना अभिनंदन भी सबके मन की करतल ध्वनि का विशिष्ट हिस्सा बना। संयोजन डॉ. अनिता राठौड़ ने किया। चुनिन्दा वरिष्ठ एवं विशिष्ट जनों की उपस्थिति में दो घंटे का यह समारोह अत्यन्त ही आत्मीयता की सादगी लिए गरिमामय यादगार के साथ सम्पन्न हुआ।

- डॉ. तुक्तक भानावत

ताराचंद का श्रेष्ठतम फोटोग्राफर्स में चयन

स्मार्टसिटी उदयपुर ने एकबार पुन: फोटोग्राफी की दुनिया में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुकाम हासिल कर न सिर्फ राजस्थान अपितु देश को गौरवान्वित किया है। इस गौरव को प्रदान करने के माध्यम बने हैं उदयपुर के प्रतिभावान युवा फोटो जर्नलिस्ट ताराचंद गवारिया जिन्होंने वर्ष 2017 में दुनिया के एक लाख तीन हजार फोटोग्राफर्स में चुने गए सर्वश्रेष्ठ 100 फोटोग्राफर्स में अपना स्थान बनाया है। यह फोटो सिंहस्थ कुंभ में लिया गया था और इस फोटो को पूर्व में भी कई अवार्ड मिल चुके हैं।

रक्तदान जीवनदान का पर्याय

नारायण सेवा संस्थान के हिरण मगरी सेक्टर- 4 स्थित मानव मंदिर में

पद्मश्री कैलाश 'मानव' के सानिध्य में आरएनटी मेडिकल कॉलेज ब्लड बैंक के सहयोग से रक्तदान शिविर आयोजित किया गया जिसमें 101 युनिट रक्त संग्रहित किया गया। उदघाटन समारोह में संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल तथा निदेशक वंदना अग्रवाल ने कहा कि रक्तदान से न केवल एक व्यक्ति की जिंदगी बल्कि पूरा परिवार उजड़ने से बचाया जा सकता है इसीलिए इसे जीवनदान कहा गया हैं। संस्थान के पोलियो हॉस्पीटल के अधीक्षक ब्रिजेन्द्रसिंह परिहार ने बताया कि आरएनटी ब्लड बैंक इंजार्च डॉ. संजय प्रकाश व उनकी टीम के डॉ. बी. सी रेगर, डॉ. सुरेश लखेरा, डॉ. दीशिका एवं संस्थान के डॉ हिरेन्द्र व राकेश शर्मा ने रक्त संग्रहण किया।

पत्रकार नरपतसिंह चौहान नहीं रहे

दैनिक भास्कर के प्रतापगढ़ ब्यूरो चीफ नरपतसिंह चौहान का 23 मई को निधन हो गया। वे 39 वर्ष के थे। बॉक्सर और क्रिकेटर रहे चौहान को पिछले सप्ताह प्रतापगढ़ में ब्रेन हेमरेज हो गया था। तभी से वे उदयपुर अस्पताल में भर्ती थे। अन्तिम यात्रा उनके निवास स्थान भट्टियानी चौहट्टा, आशापाल गली से रवाना होकर अशोकनगर मोक्षधाम पहुंची जहां उनका

अंतिम संस्कार किया गया। अंतिम यात्रा में शहर के गणमान्य नागरिकों के अलावा इलेक्ट्रोनिक एवं प्रिंट मीडिया से जुड़े वरिष्ठ एवं युवा पत्रकार मौजूद थे। चौहान के परिवार में पत्नी, 7 साल का बेटा और ढाई साल की बेटी है। चौहान पिछले 15 वर्षों से पत्रकारिता से जुड़े हुए थे।

दिव्यांग मॉडल्स ने दिखाये रैंप पर हुनर

नारायण सेवा संस्थान द्वारा जयपुर के रवीन्द्र मंच पर 'दिव्य 2018' फैशन और टैलेंट शो का आयोजन किया गया। शो के दौरान भारत नाट्यम डांसर और बॉलीवुड

अभिनेत्री सुधा चंद्रन ने दिव्यांग प्रतिभागियों का हौसला बढ़ाया और कहा कि अक्षमता वाले किसी शख्स को कभी नजरअंदाज न करें क्योंकि हमें नहीं पता कि वे कितना प्रेरित कर सकते हैं।

नारायण सेवा संस्थान सबसे अच्छे गैर-लाभकारी संगठनों में से एक है। यह सिर्फ चिकित्सा सहायता प्रदान नहीं कर रहा है बल्कि उन्हें जीवन में आगे बढ़ने में भी लगातार मदद करता है। शो के दौरान दिव्यांग लोगों के शानदार प्रदर्शन ने मेरे दिल को छुआ है और इससे मैं बहुत प्रेरित हुई हूं।

नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि इस प्रतिभागियों के लिए दिव्यांगजनों द्वारा सिलाई मशीन पर परिधानों को डिजाइन कर पूरे भरोसे के साथ रैंप पर प्रदर्शित करना उतना आसान नहीं था, जितना उन्होंने मंच पर कर दिखाया। यह सिर्फ उनके साहस और आत्मविश्वास के कारण संभव हो पाया है कि जहां भी संस्थान ने इस शो का आयोजन किया है वहां उपस्थिति श्रोतावर्ग का दिल जीता है।

श्री अग्रवाल ने बताया कि फैशन शो के दौरान मुख्य तौर पर चार राउंड आयोजित किए गए। कैलिपर्स के साथ फैशन राउंड, व्हीलचेयर के साथ फैशन राउंड, क्रचिज के साथ फैशन राउंड एवं आर्टिफिशियल लिम्स के साथ फैशन राउंड। प्रत्येक राउंड में 10 मॉडल्स ने रैंप वॉक किया। प्रत्येक दिव्यांग की सहायता के लिए एक को-मॉडल भी रैंप पर मौजूद रहा।

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 01 जून 2018

सम्पादकीय

चलाचली का खेला बनी हाईकोर्ट बैंच

लोकतन्त्र को श्रेष्ठतम शासन कहा गया है। इसमें मुख्यत: लोक की भूमिका सर्वोपरि रहती है। उसी से तन्त्र की पगड़ी बंधाई होती है किन्तु कभी-कभी यह तन्त्र इतनी ऐंठ और हेंकड़ी में आ जाता है कि लोक पटखी खाने लग जाता है। यह स्थिति ठीक नहीं कही जा सकती। लोक की बारी आने पर फिर तन्त्र को मुंह की खानी पड़ती है। ऐसी उठापटक होती रहती है।

लोक अपने में से ही वे प्रतिनिधि चुनता है जो तन्त्र चलाते हैं। ये प्रतिनिधि जनता के, लोक के सेवक याकि नेता बनकर उसके विकास और कल्याण के लिए काम करते हैं। जब उनके हाथ में सत्ता आ जाती है तो उन्हें मद आ घेरता है तब वे मदान्ध हुए लगते हैं। ऐसी स्थिति में वे अपने को जनसेवक नहीं समझ जनशासक समझने का भ्रम पाल लेते हैं तब वोट की राजनीति शुरू हो जाती है।

इस राजनीति के गलियारे बड़े दुष्प्रभावी होते हैं। इसमें राष्ट्र की साख भी गिरती है। नेता की छवि भी धूमिल होती है। कई विषमताओं तथा विसंगतियों के बीच राष्ट्र की नैया डगमगाती भी नजर आती है। मौका आने पर नेता भी धूलचट्टा बना लगता है। आजादी के बाद हमारा देश जिन हालातों से गुजरा उसका लेखाजोखा कई बार पारदर्शी तरीके से भी नहीं हो सकता। लगता है, यह सब एक चलाचली के खेले की तरह है।

जो भी हो, उदयपुर में पिछले 36 साल से सुलभ न्याय के लिए हाईकोर्ट बैंच की मांग की जा रही है। यह मांग सर्वथा न्यायोचित एवं जायज है। यह क्षेत्र सघन आदिवासी क्षेत्र है। मजे की बात यह है कि उन आदिवासियों के लिए सरकार की जितनी विकास और कल्याणकारी योजनाएं बनीं और जो राशि उनके लिए खर्च की गई उसके आधार पर तो हर परिवार सम्पन्न-लखपति बन जाना चाहिए था किन्तु वह उतना ही विपन्न-रोड़पति बनता गया। जिस जंगल और जमीन का स्वामीत्व उसके पास था, उससे भी वह विमुख कर दिया गया। ऐसे में न्याय प्राप्त करने की स्थिति उस दलदल की तरह बन गई है जिससे निकलना बड़ा दुष्कर होता है। कहा तो यह भी जाता है कि अपराधी बाहर स्वच्छंद विचरण कर रहे हैं जबकि निरपराधी जेल के सीखंचों में सजा काटने को मजबूर बने हुए हैं। सारी स्थितियां सबको मालूम है। कई बार लगता है कि न्याय पर अन्याय का मुलम्मा ही इतना अधिक चढ़ गया है कि उसकी असली तस्वीर ही धूमिल हो गई लगती है।

कहां है राजा विक्रमादित्य जैसा न्याय। हजारों मुकदमें न्याय के लिए लंबित हैं। जो जिम्मेदार हैं वे लाचार बने हैं इसलिए पिछले 36 वर्षों में जो आश्वासन दिये गये हैं उनका पुलीन्दा ही इतना बड़ा हो गया है कि द्रोपदी के चीर की तरह वह अपने ही मक्कड़जाल में उलझा हुआ है।

समय सबको देख-निरख रहा है। सबका लेखा भी ले रहा है। राजनीति के अदलते-बदलते ध्रुवीकरण भी हम देख रहे हैं। जो आग किसी समय प्रज्वलित थी वह भोमर में डटी खोई-खोई बनी हुई है और जहां धुआं भी नहीं था वहां लाय की लौए भभकती देखी जा रही हैं।

अब चुनाव सिर पर हैं। कठिन दिनों के लिए हमारे यहां पहले सब सोच समझकर चलने की पुरानी प्रथा-परम्परा है। इन चुनावों के लिए खण्डपीठ का मुद्दा भी एक बड़ा हथियार बनने वाला है। जब नैया डूबने को लगती है तब पतवार याद आती है।

सत्ता बड़ी चालबाज होती है। वह मौकापरस्त होती ताते की आंख लिए रहती है। जब जिधर उसकी चाहना होती है वह उधर उसकी किरकिरी कर देती है। मौका आने पर कभी वह गूंगी, कभी बहरी तो कभी वाचाल भी हो जाती है। तुरप का पत्ता उसके पास भी है तो जनता ने भी संभाल-छिपा रखा है। जनता सब समझती है तथा अवसर आने पर समझा भी देती है। अपनी पगरखी वह कई बार पांव में नहीं रखकर हाथ में लिए रहती है। कई बार वह अपनी पगरखी बिना तल की तो कई बार वह तेल से तरबतर बनाये रखती है। पता नहीं, कब किसकी जरूरत पड़ जाय। लगता है, अब अनशन से नहीं, अंटसंट से काम चलेगा।

पत्र-पिटारी

साहित्य और लोकसंस्कार का संगम

'शब्द रंजन' अर्थात् शब्द द्वारा लोकरंजन और लोकरंजन द्वारा लोकसंस्कारों का पोषण। भारतीय सन्दर्भ में लोक संस्कार ही श्रेयस्कर है। शब्द रंजन में नाम और काम दोनों का संयोजन इस प्रकार है जैसे प्रेय और श्रेय का संयोजन हो। नाम जितना प्रिय है काम उतना ही श्रेयस्कर। इसीलिए शब्द रंजन केवल अखबार ही नहीं है। अखबार तो वह है ही, पर उससे भी अधिक वह साहित्य और लोकसंस्कार का संगम भी है। यह संगम इसलिए है क्योंकि वह व्यावसायिकता से आच्छादित नहीं है और आच्छादित इसलिए नहीं है क्योंकि शब्द रंजन पत्र-पुतली के धागे नैपथ्य में सक्रिय संस्थापक की लोकमयता के हाथों में है। ईश्वर यह स्वरूप बनाये रखे।

-डॉ. कनक उदावत, उदयपुर

महन्त मोहनानन्द नहीं रहे

20 मई 2018 को 96 वर्ष की उम्र में दंडीस्वामी महंत मोहनानंदजी का निधन हो गया। उन्होंने उदयपुर में शास्त्री सर्कल स्थित कालादांता हनुमान का आश्विन कृष्णा अमावस्या संवत् 1990 को आश्रम संभाला। यह आश्रम सौ वर्ष प्रचीन है। इस आश्रम में हनुमान एक प्रस्तर के आगे-पीछे दोनों ओर उत्कीर्ण हैं। भक्त परिक्रमा कर दोनों हनुमान के दर्शन करते हैं। ऐसी प्रतिमा केवल नासिक में है, अन्यत्र कहीं नहीं। ये हनुमान खड़े हैं। इनके पास कालभैरव की बैठी प्रतिमा है। मोहनानन्द ने यहां आकर अंबामाता और गणेश की मंदरियां बनवाईं। पूर्व में यह स्थल राजदरबार में मृत्यु प्राप्त हुओं का अर्द्ध विश्राम स्थल रहा। इस स्थल की प्रसिद्धि काली मगरी नाम से ख्यात रही। यहां की चट्टान काले दांतावाली थी। इस कारण आमजन इसे कालादांता कहता। एक मंदिर मोहनानंदजी द्वारा कुराबड़ के पास टोड़ी गांव की पहाड़ी की तलहटी में भी बनवाया गया। यह अंबामाता का मंदिर है।

महन्त मोहनानन्द का जन्म राजस्थान के डूंगरपुर जिले के गांव बनकोड़ा में 10 अगस्त 1922 को हुआ। तेईस वर्ष गृहस्थ जीवन व्यतीत करने के पश्चात उनकी पत्नी का निधन होने पर उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया। घरबार त्याग वे संन्यासी बन गये और उदयपुर से कोई पच्चीस किलोमीटर दूर झामेश्वर महादेव की सेवा-पूजा में लग गये। यहां वर्ष भर रहने के उपरान्त वे कुराबड़ के पास बेमला गांव चले गये। वहां उन्होंने शिव-मंदिर का निर्माण और एक बड़ा यादगार यज्ञ करवाया।

मोहनानन्द ने द्वारिका शंकराचार्य स्वरूपानंद से ब्रह्मचर्य की दीक्षा ग्रहण की। यह दीक्षा मध्यप्रदेश के परमहंसी गंगा आश्रम में 7 मई 1964 को हुई। इसी प्रकार 25 अप्रैल 2004 को उज्जैन के कुंभ मेले में दंडी स्वामी की दीक्षा ली। यह दीक्षा 1008 श्री स्वामी भूरारामजी महाराज दंडीस्वामी संस्थान वाराणसी के

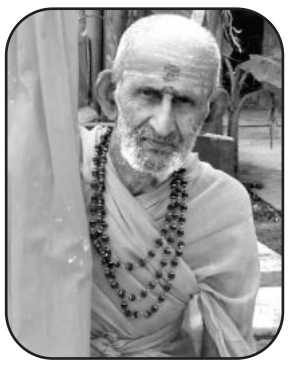

अध्यक्ष हरिस्वरानंद तीर्थ द्वारा प्रदान की गई। मोहनानन्द बुलंदशहर जिले के कर्णवास गांव की गंगा के राजघाट पर भी डेढ़ वर्ष तपे। वहां दानवीर कर्ण प्रतिदिन सवा मन स्वर्ण दान करता था। मोहनानन्द कई देव-स्थानकों का भ्रमण करते-करते तीर्थवत ही हो गये।

बद्रीनाथ में घंटाकर्ण के दर्शनों ने मोहनानन्द में अजीब रोमांच पैदा कर दिया। घंटाकर्ण शंकर का बड़ा भक्त था। दोनों कानों में घंटे बंधे रहने के कारण ही वह घंटाकर्ण कहलाया। गोपेश्वर में संध्या को भीमकाय सर्प देखा। अखेश्वर में तो शेर ही अधिक मिले। पहुंची हुई शक्तियां शेर-रूप में भी भ्रमण करती हैं। शेर और देव-शेर में भेद करना बड़ा कठिन है। कर्णवास में महन्त मोहनानन्द ने तीनों काल जप-तप, पूजा-आराधना की। सायं पांच बजे उन्हें पहले एक पुरूष दिखाई दिया। कुछ ही देर बाद उसके साथ एक महिला दिखाई दी। दोनों बीतचीत में खोये हुए थे। पुरूष की बैठणी चार फीट की थी जबकि स्त्री का कद ठिंगना था। पुरूष धोती पहने था। सिर पर चोटी थी। उसके हाथ के नाखून ही दो इंच बड़े थे। उन्हें उनमें शिव-पार्वती का स्वरूप दिखाई दिया।

बद्रीनारायण में एक साधु मिला। उसने बताया कि वह भी राजस्थान का उनके उधर का ही है, चित्तौड़ के पास चंदेरिया का। दोनों मेवाड़ी में बातें करने लगे। भगवाधारी वह साधु बोला कि चित्तौड़ पर अकबर बादशाह ने आक्रमण किया और किले को चारों ओर से घेर लिया। ऊपर किले पर चढ़ने का कोई रास्ता नहीं बचा तो उसने सैकड़ों मजदूरों को बुलवाकर पत्थर-मिट्टी की एक बड़ी ऊंची मगरी तैयार करवाई। मजदूरों को एक-एक तगारी डालने का मेहनताना एक-एक मोहर दी गई। वह स्वयं भी मजदूरों में सम्मिलित था। प्रारंभ के दिनों में एक टोकरी की एक मुहर पाने के कारण असंख्य मजदूर उलट पड़े लेकिन बाद में घटना यह घटी कि संध्या के वक्त मजदूर मिट्टी डालकर निकलता कि धोखे से उसका सिर कलम कर दिया जाता।

ऐसे तब के कई जीव वहां अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए जो अब भी वहीं भटक रहे हैं। मोहर देने के कारण वह मगरी मोहर मगरी के नाम से प्रसिद्ध हुई। तब उस साधु की उम्र अठारह वर्ष थी लेकिन बद्रीनारायण में जिस रूप में वह देखा गया, उसकी उम्र पचास से अधिक नहीं लग रही थी। रखेश्वर में एक साधु ऐसा मिला जिसका एक पांव ऊंट का था। ऐसे अनुभवों के खजाने थे मोहनानन्द।

- म. भा.

अन्तिम बार बालकवि बैरागी

-डॉ. पूरन सहगल-

सच कहूँ तो वे साहित्य आकाश में दैदीप्यमान सूर्य थे। 13 मई 2018 को अचानक भरी दुपहरी में सूरज अस्त हो गया। 10 मई और 12 मई की मेरी भेंटें यह संकेत बराबर दे रही थीं कि वे अब विश्राम की मुद्रा में हैं। नियमित लेखन उन्होंने बंद कर दिया था। कलम थम गई थी। 12 मई को उन्होंने कहा -'पूरन अब कलम उठाने को मन नहीं करता।' मेरी एक किताब 'लोक में कालिदास' की भूमिका लिखना शेष थी। उन्होंने कहा- 'तुम अपनी पाण्डुलिपि उठाकर बेग में रख लो। मैं एक-दो दिन में लिख दूँगा।' फिर मुझे निराश देख कर कहा- 'जाओ, टेबल से पेड उठा लाओ। मैं बोलता हूँ तुम लिखो।' उन्होंने भूमिका लिखवा दी। कलम नहीं उठाई। वाणी में तेजस्विता बरकरार थी।

मैंने 12 मई को ही नियमित प्रश्नकाल में प्रश्न किया- 'दादा, यदि आपको धन कुबेर मिल जाए तब आप क्या मांगेंगे?' दादा ने कहा- 'अंग्रेजी में एक कहानी पढ़ी थी ग्रीडी बेगर। उसने आवश्यकता से अधिक मांग लिया था फलत: उसकी थैली फट गई। मुद्राएँ धूल में मिल गईं। मैं ऐसी गलती कभी नहीं करूंगा।' मैंने दूसरा प्रश्न किया- 'दादा यदि आपको भगवान मिल जाए तब आप क्या मांगेंगे।' उन्होंने तत्काल कहा- 'मुक्ति। मुक्ति मांगूंगा।' मैं हतप्रभ था। दादा ने कहा- 'पूरन बुद्ध ने कहा था- जन्म उत्सव है किंतु मृत्यु महोत्सव है। मैं उसमें विस्तार देता हूँ। जन्म सत्य है और मुत्यु परम सत्य है।'

13 मई को वे ठहाके लगाते, मिलते, मिलाते 3.15 बजे दोपहर घर पहुँचे। बिस्तर पर लेटे। झपकी लगी और सम्भवत: उन्हें भगवान के दर्शन हो गए। उन्होंने तत्काल मुक्ति मांग ली। सब स्वेच्छिक था मृत्यु ने उनका वरण नहीं किया अपितु उन्होंने स्वेच्छा से, सहज रूप से मृत्यु का वरण किया। परम सत्य का वरण कर लिया।

गडरिये की वाक्पटुता

- डॉ. श्याम मनोहर व्यास -

यह बात उस समय की है जब मेवाड़ में महाराणा भीमसिंह का शासन था। एकबार वे अपने कुछ सरदारों के साथ वन-भ्रमण को निकले। मार्ग में एक चारण अपनी कविताओं द्वारा उनका मनोरंजन करता जा रहा था। एक गांव के पास पानी भरती पनिहारिनों और चरती गायों को देख कर चारण ने चितकबरी घोड़ी पर सवार, मूछों पर हाथ फेरते राणा की ओर देखा और एक दोहा बोला जिसे सुनकर महाराणा वाह-वाह कह उठे। दोहा था-

गायां तो सींग बाकी / रंग बांकी घोड़ियां।
मरद तो मूंछ बांका / नैन बांका गोरियां।।

एक ग्वाला पास ही खड़ा यह सब सुन रहा था। एक लंगड़ाती गाय को हांकता हुआ बोला- 'चल-चल री ठूंठी, चारी बातां झूंठी' और आगे बढ़ गया। महाराणा भीमसिंह ने सुना तो बोले -'तुमने यह कैसे कहा कि चारों बातें झूठी हैं?'

इस पर गडरिया बोला- 'मैंने ठीक ही कहा राणाजी।' 'फिर सच क्या है?' 'सच तो यह है महाराणाजी' -

गायां तो दूध बांकी / चाल बांकी घोड़िया।
मरद तो रण बांका / लाज बांकी गोरियां।।

महाराणा ने गडरिये की वाक्पटुता की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उसे काफी इनाम दिया।

पोथीखाना

रसिक प्रेमरस झरने दो

श्रमण संघीय प्रवर्तक मदन मुनि द्वारा सम्पादित रसिक स्मृति ग्रन्थ श्री अम्बागुरु शोध संस्थान, उदयपुर से प्रकाशित 406 पृष्ठीय महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जिसका मुख्य उद्देश्य जैन धर्मावलम्बियों को ग्रन्थकार मगन मुनिजी के साधनाशील व्यक्तित्व की अधिकाधिक जानदारी देना है इसीलिए इसका मूल्य भी मात्र 200 रूपये रखा गया है।

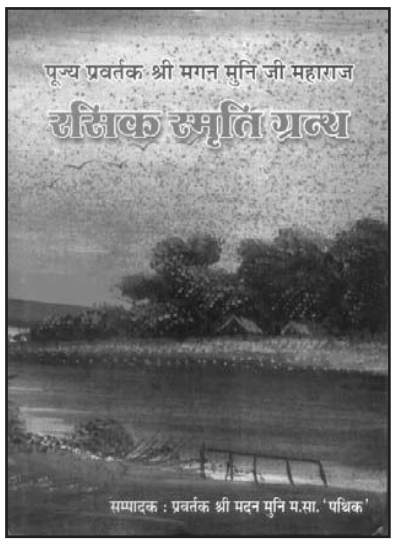

मगन मुनि का उपनाम रसिक था। सम्पादक मदन मुनि भी पथिक नाम से उपनाम लिए हैं। गुरु भाई के रूप में दोनों लम्बे समय तक साथ रहे। रसिक मुनि मितभाषी तथा मृदुल स्वभाव के थे। अच्छे कवि और उतने ही मधुर गायक तथा प्रवचनकार होने से वे जन-जन में बड़े लोकप्रिय रहे। उनका अधिक विचरण मेवाड़ में ही रहा।

यह भी महत्वपूर्ण पक्ष रहा कि रसिक मुनि श्रमण संघीय महामंत्री सौभाग्य मुनि 'कुमुद' के भी बड़े गुरु भ्राता थे। तीनों ही मेवाड़ शिरोमणि अम्बालालजी म.सा. के सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में धर्म-दर्शन तथा ज्ञान-चारित्र के आराधक बने और योग्य गुरु के सुयोग्य त्रिफल-श्रीफल के रूप में श्रमण संघ के संयम मार्ग के साधुत्व के सितारे के रूप में प्रसिद्धि लिये हैं।

अपने आशीर्वचन में सौभाग्य मुनि ने लिखा- 'प्रवर्तक श्री मगन मुनिजी म. मेरे बड़े गुरु भ्राता थे। पूज्य प्रवर्तक मेवाड़ संघ शिरोमणि गुरुदेव श्री अम्बालालजी म. सा. ने उन्हें तराशा। अनगड़ पत्थर से शिवमूर्ति बनने जैसी कहानी है।

मेवाड़ी भाषा में गीत गाने और प्रवचन करने का उनका अपना एक अलग ही लहजा था। उन्होंने जीवन के 60 वर्ष संयम में बिताये। वे सुयश के साथ जिये और सुयश के साथ चले गये। उनके मेवाड़ी भाषा में रचे सैकड़ों गीत हैं जो आज भी समाज में यत्रतत्र स्वर लहरी के रूप में उभरते हुए देखे जाते हैं।'

यह ग्रन्थ तीन खण्ड लिए है। प्रथम खण्ड में साधु-सन्तों और श्रावक श्रेष्ठीजनों के श्रद्धा वन्दन स्वरूप उद्गार हैं। द्वितीय खण्ड रसिकजी द्वारा लिखे ग्रन्थों के सम्यक विवेचन का है। लगभग 50 पृष्ठों में डॉ. महेन्द्र भानावत के दो आलेख काव्य रसिक श्री रसिक मुनिजी तथा रसिक मुनि और रामकथा अत्यधिक महत्व के हैं। अन्य विद्वानों में डॉ. तेजसिंह गौड़, डॉ. दर्शना जैन, डॉ. ममता पानेरी उल्लेखनीय हैं। तृतीय खण्ड जैन धर्म दर्शन साहित्य की विविध परम्पराओं तथा धारा-प्रधाराओं की जानकारी से समृद्ध है। ग्रन्थ के सह सम्पादक ओम पारदर्शी हैं जो एक अच्छे कवि-गीतकार के साथ अम्बागुरु शोध संस्थान के निदेशक हैं।

एक 'सारस्वत अक्षरदीप' के रूप में डॉ. मौन

डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' सादगीपूर्ण निष्ठा वाले साधनाशील संस्कृति पुरुष हैं। डॉ. अश्विनीकुमार 'आलोक' के सम्पादन में 'सारस्वत अक्षरदीप' के नाम से प्रकाशित ग्रन्थ उनके समग्र मूल्यांकन का द्योतक है। ग्रन्थ की भूमिका में डॉ. श्यामसखा 'श्याम' का यह कथन उल्लेखनीय है- 'लोकभाषा, लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति, लोकाचार, लोकमूल्यों एवं लोकपरम्पराओं को सहेजने वाले डॉ. मौन केवल एक साहित्यकार ही नहीं अपितु एक साधक, इतिहासकार, पुरातत्ववेत्ता एवं संवेदनशील व्यक्तित्व अनेक लोकभाषाओं में अनूठे शख्स हैं। वे केवल अध्यापक एवं लेखक ही नहीं, एक जन्मजात घुमक्कड़ भी हैं।

भारतीय वांग्मय में उनका स्थान आदरणीय राहुल सांकृत्यायन तथा हंसराज रहबर के समकक्ष बनाता है।' इसी के साथ सम्पादक अश्विनीकुमार 'आलोक' ने पूर्व कथन में लिखा- 'प्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन' इतिहास, संस्कृति दर्शन, भाषा-विज्ञान और लोकसाहित्य के चिन्तन लेखक हैं। पांच दर्जन पुस्तकें और दो हजार स्फुट आलेखों के अलावा वे रिपोर्ताजकार और लोकभाषाओं के उन्नयन के उदार समर्थक हैं। वे फिल्मों से भी जुड़े रहे और फोटोग्राफी के क्षेत्र में कइयों को शिखर तक पहुंचाने का श्रेय लिये हैं।'

कुल 240 पृष्ठ के इस ग्रन्थ को अक्षर आलोक, व्यक्तित्व विभाग तथा अप्पदीपो भव नामक तीन खण्डों में संयोजित किया गया है। पहले खण्ड में 36 आलेख हैं। इनमें तीन अंग्रेजी में हैं। दूसरे खण्ड में 19 आलेख हैं जबकि तीसरे खण्ड में दोनों आलेख प्रफुल्लजी द्वारा लिखे गये हैं।

इनमें से पहला 'मेरी संस्कृति परिक्रमा' तथा दूसरा 'मेरे रेडियो नाटकों के लोकचरित' नाम से है। कहना नहीं होगा कि यह ग्रन्थ अपने कलेवर में प्रो. मौन के बहुरंगी व्यक्तित्व की संजीदा जानकारी लिए है। जानकीदानी प्रकाशन, सेक्टर-28, रोहिणी, नई दिल्ली-42 से प्रकाशित यह ग्रन्थ 500 रूपये का मूल्य लिए है जो अत्यधिक ही है।

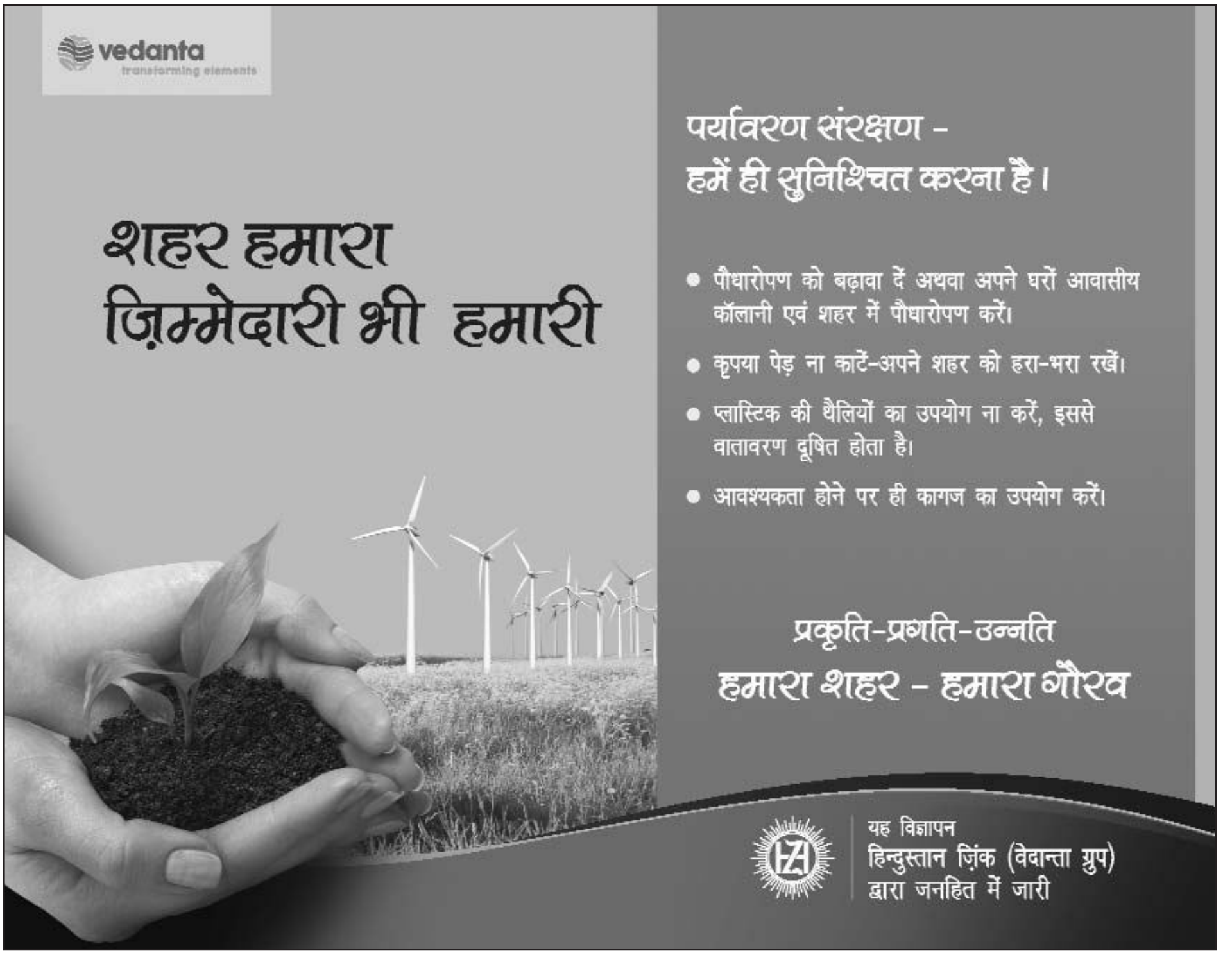

उदयपुर का वैभव थाईलैंड में करेगा देश का प्रतिनिधित्व

उदयपुर। एसेंट कॅरियर पोइंट के प्री नर्चरी डिवीजन के कक्षा 10वीं के छात्र वैभव खटेड़ का 12वें इंटरनेशनल अर्थ

साइंस ऑलम्पियाड (आईईएसओ) के लिए भारत के टॉप 4 विद्यार्थियों में चयन हुआ है। प्रेसवार्ता में एसेंट प्री नर्चर डिवीजन के प्रमुख ब्रिजेंद्रसिंह शक्तावत ने बताया कि कक्षा 10वीं में रेग्यूलर अध्ययनत वैभव खटेड़ का 12वें इंटरनेशनल अर्थ साइंस ऑलम्पियाड (आईईएसओ) के लिए पूरे भारत से कुल 4 विद्यार्थी चयनित हुए उनमें वैभव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया है। वैभव 8 अगस्त को भारत का प्रतिनिधित्व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर थाईलैंड में करेगे। वैभव की इस उपलब्धि पर एसेंट कॅरियर पोइंट के मुख्य निदेशक मनोज बिसारती ने बधाई देते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

अर्जुन ने पूरी की माउंट कंचनजंगा की चढ़ाई

उदयपुर। 8,000 मीटर से ऊंची पांच चोटियों की चढ़ाई कर चुके पर्वतारोही और माउंटेन ड्यू एंबेसडर

अर्जुन वाजपेयी ने दुनिया की तीसरी सबसे ऊंची चोटी माउंट कंचनजंगा पर चढ़ाई का अपना अभियान सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। इसके साथ ही वह 8,000 मीटर से ऊंची छह चोटियों पर चढ़ाई करने का अपना अभियान पूरा करने वाले दुनिया के सबसे युवा पर्वतारोही बन गए। 24 वर्षीय पर्वतारोही ने 20 मई को सुबह 8:05 बजे 8,586 मीटर ऊंचे इस पर्वत पर चढ़ाई की। यह अभियान 8,000 मीटर से ऊंची दुनिया की 14 चोटियों पर फतह हासिल करने के अर्जुन के अभियान में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। बेवरेज ब्रांड माउंटेन ड्यू ने 2016 से इस असाधारण सफर के लिए अर्जुन के साथ साझेदारी की है।

अर्जुन वाजपेयी ने कहा कि कंचनजंगा पर चढ़ाई करने का यह मेरा दूसरा प्रयास था और मैं आज जो महसूस कर रहा हूं उसे शब्दों में नहीं बता सकता। माउंटेन ड्यू में टीम की ओर से मिला शानदार समर्थन और प्रोत्साहन अविश्वसनीय रहा। उन्होंने इस सफर के दौरान मुझ पर भरोसा किया और मुझे मेरा सपना पूरा करने में मदद की। यह सफर चलता रहेगा और सातवें नंबर तक पहुंचने तक जारी रहेगा।

नसीब पुरी, निदेशक, माउंटेन ड्यू, पेप्सिको इंडिया ने कहा कि माउंटेन ड्यू में हम इस बात को मजबूती से मानते हैं कि हमारे भीतर साधारण से आगे निकलने की क्षमता है। हम युवाओं असली पर्वतों को पार करने के लिए प्रेरित करने की कोशिश करते हैं जो हम सभी के भीतर रहता है।

प्रापर्टी निवेशकों की संभावनाएं बढ़ी

उदयपुर। हाल ही में यूएई केबिनेट ने जो दो निर्णय लिये जिसमें विदेशी निवेशक, क्वालिफाइड प्रोफेशनल एवं प्रतिभावान छात्रों को 10 साल के लिये रिसेडन्सी परमिट देने के लिये, साथ ही प्रायवेट कंपनियों से 100 प्रतिशत फॉरेन ऑनरशिप ऑफर करने जैसे इस निर्णय से देश में बड़े पैमाने पर रियल एस्टेट मार्केट में निवेश की संभावना है और डेन्युब ग्रुप एवं रियल एस्टेट विभाग डेन्युब प्रापर्टीज नये प्रापर्टी के कस्टमर्स एवं निवेशकों को सेवा प्रदान करने के लिये सुसज्जित है।

डेन्युब ग्रुप एण्ड डेन्युब प्रापर्टी के चेयरमेन रिजवान साजन ने कहा कि यूएई में रजिस्टर्ड कंपनियों को 100 प्रतिशत फॉरेन ओनरशिप देने की योजना एक सीमाचिन्ह रूप कदम है जिससे यूएई अपने प्रादेशिक सहयोगियों में आगे रहेगा और देश में भी प्रतिभाओं को आकर्षित करेगा। दुबई स्थित डेवलपर डेन्युब प्रापर्टी के पास तैयार 3628 रेसिडेन्शियल घर का 3.14 बिलियन दिरहाम का पोर्टफोलियो है जो साउथ एशिया एवं भारत के बढ़ते निवेशकों को सेवा प्रदान करने के लिये सुसज्जित है। भारतीय नागरिक की जो दुबई के रियल एस्टेट में विशाल फोरेन इन्वेस्टर समूह का गठन किया है। उन्होंने पिछले पांच साल तक प्रापर्टी सेक्टर में से 83.65 बिलियन दिरहाम मूल्य की प्रापर्टी खरीदना होने का दुबई लेन्ड डिपार्टमेंट (डीएलडी) के आंकड़ों से पता चलता है।

साजन ने दुबई रियल एस्टेट में साल 2017 में 15.6 बिलियन दिरहाम, 2016 में 12 बिलियन दिरहाम और 2015 में 20 बिलियन दिहराम का निवेश किया है। साजन ने कहा कि भारत एवं युएई में गहरी जड़ों के साथ बिजनेस ग्रुप के तौर पर डेन्युब ग्रुप भारत और अन्य साउथ एशियन देशों के निवेशकों को सहयोग प्रदान करने के लिये सुसज्जित है। 827 घर समय और बजट अनुसार डिलिवर किये गए है और 870 से अधिक घर इस साल डिलिवर करने के लिये तैयार हो जायेंगे।

फैन्टास्टिक ब्रेक्स कॉन्टेस्ट में विजेताओं को मिले आईफोन 7

उदयपुर। वोडाफोन ने अपने अनऑफिशियल 'स्पॉन्सर ऑफ फैन्स' अभियान के तहत फैन्टास्टिक ब्रेक्स कॉन्टेस्ट का एलान किया। इसके तहत मौलासर के योगेश दीक्षित और डिडवाना के मुस्तकीम को वोडाफोन फैन्टास्टिक ब्रेक्स कॉन्टेस्ट विजेता के रूप में आईफान 7 दिया गया।

आईफोन मिलने पर मुस्तकिन ने कहा कि मैं हमेशा से वोडाफोन का कस्टमर रहा हूं। वोडाफोन ने हमेशा मुझे अपनी सर्वोत्तम सेवाएं प्रदान की हैं। मैं आईफोन 7 के इस पुरस्कार के लिए वोडाफोन को धन्यवाद देता हूं। योगेश दीक्षित ने कहा कि मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह कौशल मुझे आईफोन जीतने में मदद करेगा। मैं इसके लिए वोडाफोन का आभारी हूं।

वोडाफोन इंडिया के बिजनैस हैड-राजस्थान अमित बेदी ने कहा कि फैन्टास्टिक ब्रेक्स कॉन्टेस्ट दरअसल वोडाफोन के अनऑफिशियल स्पॉन्सर्स ऑफ फैन्स अभियान के तहत मनाया जाने वाला एक जश्न है, जिसमें किसी शख्स के सामान्य ज्ञान के साथ उसके क्रिकेट ज्ञान को परखा जाता है।

माइक्रोफाइनेंस संस्थान दे रहा वित्तीय सम्बल

उदयपुर। विषम आर्थिक परिस्थितियों से जूझ रहे परिवारों में आर्थिक सम्बल और वित्तीय समावेशन कर उनके जीवन को स्वरोजगार से जोड़ खुशिया लौटाने का कार्य कर रही है कमल फिनकैप माइक्रोफाइनेंस संस्थान। निंबाहेड़ा के एक मध्यम परिवार की गृहिणी सुमित्रा मालविया जब स्वावलम्बन की दिशा में कदम बढ़ाने की कोशिश कर रही थी, तब उनके मन में ऋण लेने में हिचकिचाहट थी। उसे कमल फिनकैप के बारे में पता चला जो आसपास के क्षेत्रों में काम करती थी और महिलाओं को माइक्रोफानेंस ऋण देती थी। जब उन्होंने अन्य महिलाओं से बातचीत कर लाभों को महसूस किया तो तत्काल 20 हज़ार रुपये का ऋण लेकर 'मनिहारी' की दुकान शुरू की। बाद में ऋणों के माध्यम से व्यापार का विस्तार जारी रखा और पारिवारिक व्यवसाय में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता बन गईं।

पति के असामयिक निधन के बाद भी, वह स्थाई आजीविका अर्जित करने में सक्षम बन गईं। सुमित्रा ने अपने क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण का एक उदाहरण स्थापित किया है। कमल फिनकैप राजस्थान में अग्रणी माइक्रोफाइनेंस संस्थानों में से एक है। कंपनी राजस्थान, मध्य प्रदेश और हरियाणा के तीन राज्यों के लगभग 38 जिलों में माइक्रो-क्रेडिट सेवाऐं प्रदान करती है। अपने ग्राहकों को वित्तीय सेवाओं तक आसानी से पहुंच प्रदान करने के अपने प्रयास में 1 लाख से ज्यादा लोगों को प्रभावित किया है। कंपनी ने कई स्थानीय महिला उद्यिमयों को अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने और अपने सपने को साकार करने में मदद की है।

'चेतक' ब्राण्ड के 50 गौरवपूर्ण वर्ष

उदयपुर। एमपी बिड़ला सीमेंट-पोर्टलैंड सीमेंट के अग्रणी निर्माताओं में से एक-ने हाल ही में अपनी स्वर्णिम जयंती मनाई। इन 50 वर्षों में, एमपी बिड़ला सीमेंट का चेतक ब्रांड 'घोड़ा छाप' सीमेंट के रूप में आसानी से पहचाना जाता है। इस क्षेत्र में यह घरेलू नाम बन चुका है और यह सभी प्रकार के निर्माण के लिए सबसे पसंदीदा सीमेंट है। एमपी बिड़ला सीमेंट चेतक, 3 ग्रेड, पीपीसी, ओपीसी 43 और ओपीसी 53 में उपलब्ध है। यह बिड़ला कॉर्पोरेशन लि. की बीआईएस मानकों के अनुरूप कठोर गुणवत्ता नियंत्रण प्रक्रियाओं के तहत चंदेरिया में अत्याधुनिक विनिर्माण सुविधाओं में तैयार किया जाता है। चूंकि एमपी बिड़ला सीमेंट चेतक कच्चे माल और तकनीकी पर्यवेक्षण के उच्चतम ग्रेड के साथ एक ही सुविधा में उत्पादित किया गया है।

कार्डियक केयर इन्श्योरंस में संशोधन

उदयपुर। स्टार हेल्थ एंड अलायड इन्श्योरंस कंपनी लि. ने अपनी स्टार कार्डियक केयर इन्श्योरंस पालिसी कमतर प्रीमियम के साथ पेश की है। उपभोक्ता अब अपनी उम्र के हिसाब से कार्डियक पालिसी 28-40 प्रतिशत कमतर दर पर ले सकते हैं। स्टार हेल्थ एंड अलायड इंश्योरंस के मुख्य परिचालन अधिकारी, डॉ एस प्रकाश ने कहा कि स्टार हेल्थ ने 2013 में पहली बार स्टार कार्डियक केयर इन्श्योरंस पालिसी लॉन्च की थी जिसके सुरक्षा दायरे में ऐसे व्यक्ति शामिल हैं जिन्हें हृदय सम्बन्धी बीमारी हो चुकी है या वे बाईपास सर्जरी समेत अन्य उपचारों से गुजर चुके हैं। इस पालिसी में दिल की बीमारी के सम्बन्ध में अस्पताल में भर्ती होने, दुर्घटना और अन्य (दिल की बीमारी के अलावा) बीमारियों को भी बीमा सुरक्षा दायरे में शामिल किया गया है। इसके अलावा इस संशोधित पालिसी में हर तरह की डे केयर प्रक्रियाओं को भी शामिल किया गया है जबकि पिछली पेशकश 405 प्रक्रियाओं तक सीमित थी।

डॉ. एस प्रकाश ने कहा कि स्टार कार्डियक केयर पालिसी बाजार में सफल रही है। इसके लॉन्च से अब तक पिछले पांच सालों में पालिसी की मांग में बढ़ोतरी हुई है। स्टार कार्डियक केयर के बिक्री में वित्त वर्ष 2017-18 के दौरान पिछले साल के मुकाबले करीब 27.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज हुई। स्टार हेल्थ में हमारा लक्ष्य हमेशा ऐसे उत्पाद विकसित करने का रहा है जो उपभोक्ताओं की जरुरत पूरी करे।

करियर लिफ्ट एड-टेक : शैक्षणिक संस्थानों के लिए प्रौद्योगिकी समाधान प्रदान करना

उदयपुर। तेजी से बदलती तकनीक के साथ शिक्षा के नए-नए तरीके भी लगातार विकसित हो रहे हैं। नई प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ, शैक्षणिक संस्थान परंपरागत तरीकों से आधुनिक तरीकों की तरफ बदल रही हैं।

पारंपरिक शिक्षा विधियां विषय केंद्रित होती हैं, जबकि आधुनिक तरीके के व्यावहारिक दृष्टिकोण पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के बढ़ते उपयोग ने छात्रों के सीखने का तरीका बिल्कुल ही बदल दिया हैं। अब, छात्र को जो कुछ भी सीखना है, वह उसे इंटरनेट पर मिल जाता है। लेकिन, जानकारी की उपलब्धता के साथ तेजी से बदलते शिक्षकों से उचित मार्गदर्शन भी महत्वपूर्ण है। इस तेजी से बदलते क्षेत्र में, शिक्षा संस्थानों के लिए छात्रों की ज्यादा संख्या बनाए रखकर तथा दूसरों से प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त करना भी महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसे में बदलती तकनीक को अपनाना ही एकमात्र तरीका है, क्योंकि इससे ही सम्पूर्ण विकास संभव है।

करियर लिफ्ट के संस्थापक नितिल गुप्ता कहते हैं, हम करियर लिफ्ट एड-टेक में, शिक्षा के तरीकों को फिर से परिभाषित करने की कोशिश कर रहे हैं ताकि शैक्षणिक संस्थान के इस रुझान को अपना सके। शिक्षा के क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा शैक्षिक संस्थानों को सर्वोत्तम समाधान प्रदान करने के लिए आर्ट टेक्नोलॉजी के साथ मिलकर हमारे प्रोडक्ट को डिजाइन किया गया है। हमारा प्रमुख प्रोडक्ट एडु-सीएमएस है जो एक शिक्षा वेबसाइट है जिसे शैक्षणिक संस्थानों की जरूरतों के मुताबिक तैयार किया गया है। कोचिंग संस्थानों के लिए, हम उनके उपयोग के आधार पर एजुकेशन कंटेंट, शैक्षणिक मोबाइल ऐप और ऑनलाइन परीक्षा प्लेटफार्म भी तैयार करते हैं।

यूपीईएस द्वारा बी.टेक काउन्सलिंग

उदयपुर। देहरादून की अग्रणी युनिवर्सिटी 31 मई से 3 जून के बीच नौ शहरों, दिल्ली, मुंबई, हैदराबाद, देहरादून, भोपाल, लखनऊ, पटना, जयपुर और चण्डीगढ़ में उन छात्रों के लिए बी.टेक काउन्सलिंग का आयोजन कर रही है जो एन्ट्रेन्स एक्ज़ाम पास कर चुके हैं।

इस बार काउन्सलिंग का आयोजन बड़े ही रोचक तरीके से किया जाएगा। इसमें छात्रों को यूपीईएस कैंपस का अनुभव प्रदान करने के लिए वर्चुअल रिएल्टी टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया जाएगा। आईबीएम, ज़ेबिया जैसे जाने-माने संस्थानों के विशेषज्ञ छात्रों और उनके माता-पिता के लिए विशेष सत्रों का आयोजन करेंगे। फैकल्टी, करियर सर्विसेज़, एनरॉलमेन्ट्स, एडमिनिस्ट्रेशन की टीमें छात्रों को मार्गदर्शन देंगी और उनके सभी सवालों के जवाब दिए जाएंगे। छात्रों को एल्युमनाई यानि युनिवर्सिटी के पूर्व छात्रों से मिलने का मौका भी मिलेगा। यूपीईएस के इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट्स, एक्सट्रा-करीकुलर गतिविधियों तथा पढ़ाई के अलावा अन्य गतिविधियों के बारे में जानकारी देने के लिए एक्सपीरिएंस ज़ोन बनाया जाएगा।

सूर्यप्रकाश मेहता बने श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा अध्यक्ष

उदयपुर। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा का वार्षिक अधिवेशन रविवार को यहां नाइयों की तलाई स्थित तेरापंथ भवन में संपन्न हुआ। अधिवेशन में सभा के मंत्री राजेंद्र बाबेल ने गत वर्ष की साधारण सभा की रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। कोषाध्यक्ष महेंद्र सिंघवी ने आय-व्यय का ब्यौरा पेश किया जिसे सदन ने ध्वनिमत से पारित किया। उसके बाद चुनाव अधिकारी लक्ष्मणसिंह कर्णावट ने आगामी दो वर्ष के लिए अध्यक्षीय चुनाव की प्रक्रिया प्रारंभ की। इसमें दो प्रत्याशी निवर्तमान अध्यक्ष सूर्यप्रकाश मेहता व छगनलाल बोहरा चुनाव मैदान में थे। अपरान्ह ढाई से छह बजे तक मतदान प्रक्रिया हुई जिसमें कुल 1008 लोगों ने मताधिकार का प्रयोग किया। इसमें सूर्यप्रकाश मेहता ने छगनलाल बोहरा को 13 वोटों से हरा दिया। चुनाव अधिकारी ने जैसे ही विजेता की घोषणा की, पूरा सदन जयकारों से गूंज उठा।

समर्थकों ने सूर्यप्रकाश मेहता को फूल-मालाओं से लाद दिया। उल्लेखनीय है कि सूर्य प्रकाश मेहता पहले तेरापंथ समाज में चार वर्षों तक मंत्री व दो वर्षों तक अध्यक्ष रह चुके हैं। श्री मेहता के चुनाव संयोजक प्रबंधन टीम के संयोजक अर्जुन खोखावत, सह संयोजक आलोक पगारिया ने जीत पर प्रसन्नता जताई।

आईसीआईसीआई के 'ईजीपे' से जुड़े 1.75 ग्राहक

उदयपुर। आईसीआईसीआई बैंक ने देश की पहली डिजिटल पॉइंट ऑफ सेल (पीओएस) ऐप्लीकेशन 'ईजीपे' में अनेक ऐसी सुविधाएं जोड़ी हैं जो देश में अपनी श्रेणी में सबसे पहले उपलब्ध कराई गई हैं। इसे व्यापारियों/खुदरा विक्रेताओं और पेशेवरों को यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई), क्रेडिट/डेबिट कार्ड और किसी भी बैंक की इंटरनेट बैंकिंग, आधार पे, भारत क्यूआर कोड और 'पॉकेट्सबाईआईसीआईआई बैंक' सहित कई डिजिटल मोड के माध्यम से भुगतान एकत्र करने के लिए विमुद्रीकरण के दौरान बैंक द्वारा लॉन्च किया गया था। तब से ईजीपे ने तेजी से आगे बढ़ते हुए 1.75 लाख ग्राहकों की संख्या को हासिल कर लिया है, जिसके बाद बैंक का देशव्यापी फिजिकल और डिजिटल पीओएस नेटवर्क 7 लाख से अधिक तक पहुंच गया है।

आईसीआईसीआई बैंक के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अनूप बागची ने कहा कि आईसीआईसीआई बैंक ने डिजिटल अर्थव्यवस्था में बदलाव को तेज करने के लिए डिजिटल नवाचारों को शुरू करने में हमेशा अग्रणी भूमिका निभाई है। इसी को ध्यान में रखते हुए विमुद्रीकरण के दौरान हमने मोबाइल एप्लीकेशन के रूप में एक डिजिटल पॉइंट ऑफ सेल 'ईजीपे' को लॉन्च किया।

यह एक नई और अनूठी अवधारणा थी क्योंकि इसका उद्देश्य पूरे देश में लाखों व्यापारियों, खुदरा विक्रेताओं और पेशेवरों के लिए एक ही मोबाइल ऐप्लीकेशन पर विभिन्न तरीकों से डिजिटल भुगतान को सुविधाजनक बनाना था। ईजीपे को बाजार में किराने की दुकानों, रेस्तरां, यात्रा और टूर ऑपरेटर, कैमिस्ट्स और पेशेवरों जैसे क्षेत्रों से उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली है। इसके जबरदस्त उपयोग की बदौलत एक साल के भीतर इसका नेटवर्क 1.75 लाख तक पहुँच गया है जिससे बैंक के नेशनवाइड फिजिकल और डिजिटल नेटवर्क की संख्या 7 लाख तक पहुँच गयी है।

कलमकारों का सम्मान

उदयपुर। मीडिया एक्शन फोरम द्वारा आयोजित समारोह में प्रेमप्यारी भटनागर, डॉ. विमला भंडारी, डॉ. देवेंद्र इंद्रेश, हिम्मत सेठ, गिरीश विद्रोही, डॉ. नीलम खरे, डॉ कुंजन आचार्य, जनाब अनस खान, गौरीकांत शर्मा, मोनिका गौड़, कृष्णा कीर्ति जांगिड़, प्रियदर्शिनी वैष्णव को तनिमा पत्रिका की ओर से डॉ. भंवर सुराणा की स्मृति में कलम के सिपाही सम्मान से नवाजा गया। इस अवसर पर डॉ. शकुंतला सरूपरिया की काव्यकृति 'कहानियों से बेटियों' का लोकार्पण किया गया।

बधाई

सीबीएसई द्वारा आयोजित बारहवीं विज्ञान परीक्षा में शब्दांक भानावत पुत्र डॉ. तुक्तक भानावत ने 94.2 तथा आदित्य भाणावत पुत्र डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत ने 90 प्रतिशत अंक प्राप्त कर सफलता हांसिल की।

दसवीं परीक्षा में मोहम्मद ताबिश शेख पुत्र मोहम्मद तस्कीन शेख ने 93.8 तथा संस्कार शर्मा पुत्र कमलेश शर्मा, उपनिदेशक सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग बांसवाड़ा ने 93 प्रतिशत अंक प्राप्त किये।

विकास प्रदेशाध्यक्ष, महावीर प्रदेश सचिव नियुक्त

उदयपुर। अखिल भारतीय पत्रकार एवं सम्पादक एसोसिएशन संघ के राष्ट्रीय महासचिव आशिष मिश्रा ने एक परिपत्र जारी कर भीलवाड़ा निवासी विकास जैन पुत्र ऋषभ कासलीवाल को प्रदेशाध्यक्ष तथा महावीर पुत्र चौथमल शर्मा को प्रदेश सचिव पद पर नियुक्त किया है।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

हार्दिक आभार

(1) ताराशंकर जोशी, अध्यक्ष ग्रामोत्थान परिषद, मांडल द्वारा 1000 रूपये सहयोगार्थ शब्द रंजन के सहयोगी के रूप में।

(2) डॉ. सतीश मेहता द्वारा मातुश्री प्रेमबाई की स्मृति में 2000 रूपये सहयोगार्थ।

'टाइम नहीं है' फिल्म की उदयपुर में शूटिंग

उदयपुर। आजकल हर कोई कहता है कि 'टाइम नहीं है' खासतौर पर युवा पीढ़ी जिसके पास मौज-मस्ती और सोशल मीडियाा के लिए तो टाइम है मगर जब घर और परिवार की बात आती है तो कहते हैं कि 'मेरे पास टाइम नहीं है'। इस महत्वपूर्ण विषय पर पूजा मूवीज एण्ड फन के बैनर तले प्रोड्यूसर, स्टोरी राइटर मनीष रांदड़ (माहेश्वरी) ने 'टाइम नहीं है' फिल्म बनाई है। फिल्म की शूटिंग उदयपुर और मुम्बई में हुई है। फिल्म 15 अक्टूबर को रिलीज होगी।

निर्माता मनीष ने बताया कि यह कहानी हमारी और आपकी नहीं, घर-घर की, हम सबकी कहानी है। पूरी दुनिया में आज यही संकट है कि किसी के पास समय नहीं है। समय की कमी का असर सामाजिक व पारिवारिक रिश्तों पर भी पड़ रहा है। इस पारिवारिक फिल्म को देखने के बाद हर परिवार का बेटा समय की कद्र करते हुए समय पर परिवार वालों के काम आने की सीख ले सकेगा।

फिल्म के प्रोड्यूसर मनीष रांदड (माहेश्वरी), श्याम मालानी, राजेश रांदड़, संजय गर्ग, विष्णु सारड़ा, डायरेक्टर मनोज शर्मा, लाईन प्रोड्यूसर सन्नी अग्रवाल हैं। फिल्म में शक्ति कपूर, कृष्णा अभिषेक, राजपाल यादव, रजनीश दुग्गल, यूविका चौधरी, गोविन्द नामदेव, हिमानी शिवपुरी, टिक्कू तलसानिया, शेखर शुक्ला, हेमंत पांडे, रेखा वशिष्ठ आदि कलाकारों ने भूमिकाएं निभाई हैं। संगीत प्रवीण भारद्वाज ने दिया है।

अमिताभ मेरे रोल मॉडल : शक्ति कपूर

शक्ति कपूर ने कहा कि पहले तीन तक गिनूंगा तेरी महबूबा को मार दूंगा, सात तक गिनूंगा तेरी मां को मार दूंगा, दस तक गिनूंगा तेरे बाप को मार दूंगा, सवेरे, दोपहर और शाम को इस तरह के डायलॉग बोल-बोल कर जब मैं बोर हो गया तो कुछ हटकर करने की सोची और सुपरस्टार अमिताभ बच्चन के साथ सत्ते पे सत्ता और बाप नंबरी बेटा दस नंबरी फिल्में मिलीं। इसके बाद विलेन की छवि को विराम लगा और वह हर तरह के रोल करने में एक्सपर्ट हो गए। उन्होंने कहा कि जितेन्द्र, श्रीदेवी, जयाप्रदा और मेरे द्वारा अभिनीत सुपरहिट फिल्म तोहफा में उनके द्वारा बोला गया डायलॉग आउ ललिता उस जमाने में इतना पोपुलर हुआ कि स्कूल, कॉलेज के छात्रों के लिए यह एक तकिया कलाम बन गया।

व्यसन मुक्ति जागरुकता रैली आयोजित

उदयपुर। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर गुरुवार को नारायण सेवा संस्थान की ओर से संस्थान के मानव मंदिर परिसर से व्यसन मुक्ति जागरुकता रैली निकाली गई। प्रवक्ता दल्लाराम पटेल ने बताया कि प्रात: 9 बजे रैली को संस्थापक कैलाश 'मानव' ने झण्डी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने कहा कि तम्बाकू के सेवन से भारत सहित विश्व के कई देशों में लाखों लोग प्रतिवर्ष मृत्यु के ग्रास बनते हैं। कैंसर जैसा जटिल रोग भी इसी की देन है। इस अवसर पर श्री मानव ने कई लोगों को तम्बाकू छोडने की शपथ दिलाई। रैली में देवेन्द्र चौबीसा, विष्णु शर्मा हितैषी, रोहित तिवारी, रजनीश शर्मा व दिनेश सोनी उपस्थित थे। रैली में उदयपुर नर्सिंग कॉलेज, सनराइज नर्सिंग कॉलेज के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस दौरान जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल के सहयोग से नि:शुल्क कैंसर जांच एवं परामर्श शिविर आयोजित किया गया जिसमें डॉ. अर्जुन, यशोदा पणिया व भगवंती की टीम ने जांच कर परामर्श दिया।

लैपटॉप का उपहार

सीबीएसई की बारहवीं विज्ञान वर्ग की परीक्षा में उत्कृष्ट अंकों से उत्तीर्ण होने पर शब्दांक भानावत को उसके नाना-नानी श्री सुभाषजी-रूकमणीदेवी नलवाया ने शुभाशीर्वाद स्वरूप लैपटॉप का लेटेस्ट मॉडल डेल इंस्पीरोन 5570 उपहार स्वरूप प्रदान किया।

प्रथम पुण्यतिथि (10 जून) पर -

मनहर प्रभा बिखेरते रहे मनोहर प्रभाकरजी

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

सरकारी सेवाओं में रहते पत्रकार और लेखक के साथ जनसम्पर्क से अधिकाधिक रूप में जुड़े रहने वालों में मुझे दो व्यक्ति अधिक प्रभावी और लोकप्रिय लगे जो अब स्मृतिशेष हैं। उनमें एक राजेन्द्रशंकरजी भट्ट तथा दूसरे डॉ. मनोहरजी प्रभाकर थे। प्रभाकरजी से मेरा अधिक खुलापन और सम्माननीय याराना रहा। दोनों ही मेरे से अधिक बड़े, अधिक अनुभवशील, अधिक रोचक और अधिक सम्पर्की थे जो राजकाज की दृष्टि से गोटियां बिठाने तथा उन्हें दुरस्त रखने में भी कामयाब रहे।

भट्टजी मुझसे एक पीढ़ी से भी आगे थे पर बड़े सहृदयी और मुस्कान भरे थे। उनसे भी कई जगह और उनके निवास पर मेरा मिलना हुआ पर अपनी कम आयु के संकोच के रहते उनसे मैं ही सिकुड़ा रहा। मनोहरजी मुझसे आधी पीढ़ी ही बड़े थे। उनसे यह अलगाव भी नहीं रहा इसलिए भी कि वे बड़ी मस्त तबीयत के मिलनसार आत्मीय और मौका मिलने पर ठहाके मारने की चूक नहीं करते थे। मैं ऐसी यारबाजी का अभ्यस्त कुछ तो नंदबाबू तथा डॉ. प्रकाश 'आतुर' के साथ रहने से और कुछ हमदोस्त कमर 'मेवाड़ी' एवं डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी के याराना से हो चुका था। ठहाकों के ठाठ ठसक में आलमशाह भी निरन्तर स्मृति में रहते हैं।

प्रभाकरजी ने कई क्षेत्रों में, विविध रूपों में अपनी प्रभा बिखेरी। उन्हें एक सधे हुए गीतकार, एक सफल विचारक, एक कुशल सम्पादक और बंधे हुए स्तंभकार के अलावा सरकारी कामकाज की उपलब्धियों और योजनाओं को सुथराई से प्रचारित तथा प्रकाशित कर जनजीवन को सफलतापूर्वक खबरवान बनाने का उल्लेखनीय श्रेय जाता है।

मनोहरजी मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावतजी के अच्छे दोस्त थे। उनके निधन के बाद वे डॉ. संजीव से गहरे जुड़े सो उनके हालचाल मैं डॉ. संजीव से लेता रहता। किसी काम से मैं 25 अप्रेल 2017 को जब जयपुर गया तो दृढ़ निश्चय कर लिया कि इस बार प्रभाकरजी से अवश्य भेंट करूंगा। यह सोच मैंने अपने मित्र श्रीकृष्ण शर्मा को फोन किया और उनके घर चला गया। शर्माजी से बहुत पहले जब वे उदयपुर में थे तब से मेरी घनिष्टता रही। यहां उनके अन्य अजीज थे डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ, चन्दन जोशी तथा वीरचन्द मेहता। चारों मिल विविध कार्यक्रमों की आये दिन हलचल देते रहते। देवीलाल सामर से इनका नैकट्य होने के कारण अधिकतर यादगार कार्यक्रम भारतीय लोककला मंडल में आयोजित किये गये सो मैं इन चारों के और अधिक निकट हो गया।

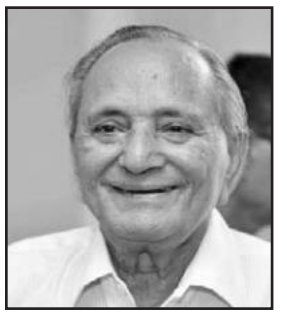

सो उस दिन शर्माजी मुझे मनोहरजी से मिलाने ले गये। मैं पहलीबार ही उनके निवास पर गया था। यों बीमार तो वे चल ही रहे थे मगर मुझे कोई गंभीर बीमार नहीं लगे। अपने कक्ष के बाहर आकर वे बड़ी तबीयत से गले मिले। कुशलता के हालचाल पूछे और पास ही के कमरे में हमें बैठक दी। उदयपुर की नई-पुरानी साहित्यिक गप्पेबाजी के बीच वे हमारी मेहमानबाजी करना नहीं भूले। हमारे नहीं चाहते हुए भी वे हमारी रसिकता को विराम देते उठे और ताजे लड्डू लाये। बार-बार उन्हें खाने का आग्रह करते रहे। हमने मजाक भी दी कि सरकार में रहते कई तरह का दबाव आप पर आया होगा और दूसरों पर भी दबाव मारते रहे होंगे। ऐसी स्थिति में लड्डू पर दबाव देने का अभ्यास अब भी छूटा नहीं है।

हमें लगा कि लड्डू खाये बिना वे छोड़ेंगे नहीं और न बातों का सिलसिला ही जुड़ेगा। अपने हाथों से हमारे हाथों में लड्डू देने की उनकी महनीय परोसकारी ने वातावरण को और खुशहाल बना दिया। आध-पौन घंटा कैसे बीता, हम भूल बैठे कि मनोहरजी बीमार हैं। वे बाहर तक हमें छोड़ने आये।

लेखन की दृष्टि से प्रभाकरजी सदैव अथक रहे। निरंतर कुछ न कुछ लिखने-लिखाने की दिशा में वे मित्रों को भी प्रेरित करते रहे और जहां-जहां भी वे पत्रकारिता से जुड़े रहे, वहां अपने मित्रों को भी प्रकाशन का गरिमापूर्ण अवसर देते रहे। एकबार किसी गोष्ठी में उन्होंने मुझे राजस्थानी पत्रकारिता के क्षेत्र में काम करने की गंभीर चर्चा के दौरान बताया कि संजीदगी के साथ किसी समर्पित लेखक की तलाश करो ताकि उसके साथ मेरा उपलब्धिमूलक स्थायी महत्व का कार्य हो सके। बात आई-गई हो गई।

वे भी बीमार रहने लगे पर मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने स्वयं ने ही वह काम करने का बीड़ा उठाया है। एकदिन उनका पत्र मिला जिसमें उन्होंने राजस्थानी भाषा में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं की जानकारी चाही। उनका 21 अक्टूबर 2016 का लिखा वह पत्र था-

प्रिय डॉ. महेन्द्र भानावतजी

पिछले दिनों आप जयपुर पुरस्कार ग्रहण करने आए, तब आशा थी कि आप मुझसे मिलने के लिए कुछ वक्त निकालेंगे, लेकिन शायद व्यस्तता ने इसकी अनुमति नहीं दी। द्वारकानिधि पुरस्कारों का मैं सात वर्ष तक निर्णायक रहा हूं और अभी तीन-चार वर्ष से ही मैंने अस्वस्थता के कारण उनसे क्षमा मांग ली है। यह पत्र मैं एक विशेष प्रयोजन से लिख रहा हूं। मैं राजस्थानी भाषा की पत्रकारिता पर कुछ काम करना चाहता हूं। मुझे इसमें आपके सहयोग की परम आवश्यकता है। आप यदि मुझे राजस्थानी भाषा में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं की एक सूची बनाकर भेज सकें, तो कृपा होगी। कुछ पुराने अंक भी आपके पास होंगे, वे भी उपलब्ध करा देंगे तो मैं देखने के बाद वापस लौटा दूंगा। द्वारकानिधि पुरस्कार मिलने पर आपको हार्दिक बधाई। भविष्य में और अधिक पुरस्कार पायें। 'शब्द रंजन' के अंक देखने को कभी-कभी मिल जाते हैं। बहुत अच्छा निकाल रहे हैं।

- डॉ. मनोहर प्रभाकर

मैंने पत्र प्राप्ति के बाद उनसे लम्बी बात की और बताया कि जिन लोगों ने पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित कीं, उनके पास भी उनका संग्रह नहीं है। कुछ लोग जिनके पास अच्छा संग्रह है वे स्मृतिशेष हो गए हैं तब भी मैं पूरी और पुख्ता जानकारी जुटाने में लगा हूं। वह कार्य आधा-अधूरा ही रह गया। वे यदि इस कार्य को अपने हाथ में लेते तो बेशक एक उम्दा और अनूठा कार्य सम्पादित हो सकता था। विधि के आगे सब हारे को हरिनाम हैं।

प्रभाकरजी से मेरा संपर्क बराबर बना रहा। जब मैंने 'रंगायन' तथा 'पीछोला' पत्र प्रारंभ किया तो लगातार उनके संपर्क में रहा। कोई पुस्तक प्रकाशित होती तो उन्हें अवश्य भेजता। वे भी जब-जहां मिलते, समय बचाकर भेंट अवश्य करते।

उनका पत्र-व्यवहार भी कभी शिथिल नहीं रहा। मैं जब भी कोई पुस्तक या पत्र भेजता, उसकी प्राप्ति और अपनी सम्मति अवश्य भेजते। इस मामले में अधिक सजग और शीघ्रगामी रहते। अपने पत्र में वे पारिवारिकता का भी खूब निर्वाह करते। सब परिजनों के प्रति वे अपना स्नेहिल व्यवहार और प्रशंसात्मक भाव व्यक्त करते। इससे उनके पत्र प्रेरणात्मक भी होते।

एकबार मैंने उनको अपनी दो पुस्तकें भेजीं। उन्होंने उनकी पहुंच में बड़ी आत्मीयता का पत्र लिखा जिससे तुक्तक का न केवल प्रेरणात्मक साहसवर्धन हुआ बल्कि वह भी उनके गहरे संपर्क में आ गया। जयपुर से 19 मई 2008 का लिखा वह पत्र इस प्रकार था-

प्रिय डॉ. भानावतजी,

कल ही आप द्वारा भेजी गई दोनों पुस्तकें प्राप्त हुईं। उसके तुरन्त बाद ही चिरंजीव तुक्तक से फोन पर बातचीत भी की। मुझे यह देखकर बहुत प्रसन्नता होती है कि सत्तर के पार भी आप मैदान में हैं और निरंतर लोकसंस्कृति के संरक्षण और उन्नयन के लिए अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से प्रयत्नशील हैं। अपनी इन नई पुस्तकों के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। अपने पुराने संबंधों का आप जिस आत्मीयता के साथ निर्वाह करते हैं, वह गुण आजकल दुर्लभ होता जा रहा है। मेरे लिए यह भी एक सुख प्रतीति है कि चिरंजीव तुक्तक भी आप ही की तरह भावनाशील और परिश्रमी है। जनसंपर्क और पत्रकारिता का जो पद उसने अंगीकार किया है, उसमें अब विपुल संभावनाएं हैं। मैं आश्वस्त हूं कि निकट भविष्य में ही उसे एक विशिष्ट पहचान मिल सकेगी। प्रभु से प्रार्थना है कि आप स्वस्थ एवं प्रसन्न रहें और आपके संचित यश में निरंतर विस्तार होता रहे।

- डॉ. मनोहर प्रभाकर

प्रभाकरजी जब राजस्थान पत्रिका में रविवारीय एवं अन्य परिशिष्ट के प्रभारी संपादक थे तब उनमें जो सामग्री प्रकाशित होती वह लोकरंजक से परिपूर्ण होती। उस समय के कई अंक मेरे संग्रह में हैं जिनसे प्रेरणा लेकर मैंने बहुत सी उस सामग्री को खोज निकाला जिस पर आगे जाकर अन्य विद्वानों ने विस्तृत रूप से शोधानुसंधान किया। उन्होंने लोकानुरंजनपरक मुझसे भी कई आलेख लिखवाये। इस विषयक उनका एक पत्र मेरे संग्रह में है जिसे यहां दिया जा रहा है। यह पत्र 18 फरवरी 1995 का लिखा है-

प्रिय डॉ. भानावतजी

आपने पत्रिका द्वारा प्रकाशित शनिवारीय थावर के अंक देखे होंगे। जैसा कि आपको विदित होगा, हम इस परिशिष्ट में मुख्यत: लोकरंजन की सामग्री प्रकाशित करते हैं। मैं कृपा मानूंगा, यदि आप हमें समय-समय पर कुछ अछूते और अल्पज्ञात विषयों पर सामग्री भेज सकें। फिलहाल हमें कठपुतलियों पर एक आलेख की तत्काल आवश्यकता है। कृपया शीघ्र भिजवाने का कष्ट करें।

-डॉ. मनोहर प्रभाकर

उनका पत्र प्राप्त कर मैंने तत्काल उन्हें कठपुतली विषयक एक आलेख भेजा। लेख के साथ पांच श्वेत-श्याम चित्र तथा चार ट्रांसपेरंसी भेजीं। यह लेख शनिवारीय थावर अंक में उन्होंने बड़ी तबीयत से प्रकाशित किया जिसके लिए उनके साथ मुझे भी कई लोगों ने सराहना भरे पत्र लिखे।

ऐसे यारबाज मित्र जहां भी जुड़ते हैं, दुखदर्द सब कुछ हवा हो जाता है। इस यारबाजी के कारण ही मनोहरजी हंसते-मुस्कराते 85 वर्ष की उम्र में 10 जून 2017 को सदा के लिए हम सबसे स्मृतिशेष हो गये।

संग्रहालय दिवस पर उदयपुर का सिटी पैलेस

फोटो - प्रशांत लोहार

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।